दो श्रेष्ठ उपन्यास

यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' की अन्य कृतियां

नयना नीर भरे (उपन्यास)
तलाक दर तलाक ( )
श्रेष्ठ ऐतिहासिक कहानियां
शिक्षाप्रद गाथाएं (बालकथाएं)

कविता प्रकाशन, बीकानेर

दो श्रेष्ठ उपन्यास

यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'

यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' की अन्य कृतिया

नयना नीर भरे (उपन्यास)
तलाक दर तलाक (   )
श्रेष्ठ ऐतिहासिक कहानिया
शिक्षाप्रद गाथाए (बालकथाए)

कविता प्रकाशन, बीकानेर

दो श्रेष्ठ उपन्यास
यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'
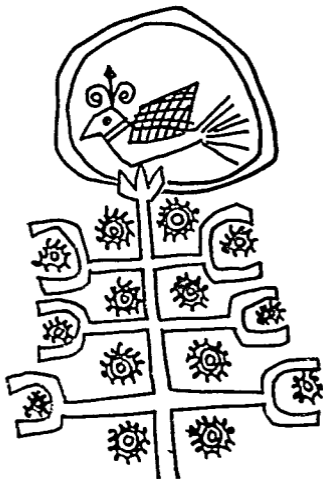
सामाजिक कार्यकर्त्ता
एवं
राजस्थानी के
अनन्य उपासक
श्री रतन शाह को सप्रेम

मैं इतना ही कहूगा

प्रस्तुत सग्रह म मेरे दा ऐतिहासिक उपन्यास सग्रहीत है। उपन्यास लघु हैं और उनम ऐतिहासिक सदभ म मानवीय सवदनाआ को कुरेदन की चेष्टा की गयी है। प्राय इतिहास के पष्ठ चरित्रो की प्रशसा व सतहीपन म ग्रस्त हैं। ऐसी स्थिति मे मनोवैज्ञानिक धरातल व सामयिक प्रसगा का देखकर लिखना दुष्कर तो है पर सुखदायक भी।

पाठका की राय की प्रतीक्षा रहेगी।

—यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र'

आशालक्ष्मी
ईदगाहबारी के भीतर
बीकानेर 334001

परिणति

1

साझ अपन वद्धा स्त्री की तरह धीरे धीरे पहाडी पर बस किल क कगूरा व प्राचीरा को चूमती हुई उतर रही थी। एसा प्रतीत हो रहा था कि शुग-श्रेणिया धूप-स्नान का अतिम स्वाद ल रही हो। प्रतीची म तिमिर अधिक गहरा होकर बढ़ रहा था मानो कोइ काली दानवी अपन विशाल पखा को तीव्रता स फला रही हो।

पक्षी-समूह स्वरा म नीडा की ओर आ रह थे। दो कौव काव काव करत हुए घाटी की ओर लपक रह थे।

हवा म न ता ठडक थी और न उमस। एक मिलजुला प्रभाव। धुधल होत हुए नील गगन म एक मघ-खड पान की नाव की तरह तैर रहा था।

किल के प्रमुख वातायन म बूदी का मुखिया और अधीश्वर जैता गभीर मुद्रा बनाए काष्ठ-चौकी पर बठा था। चौकी पर गद्दा था। कोमल और मोटा गद्दा।

आहिस्ता-आहिस्ता तिमिर गहरा होता रहा। आत्मलीन जैता को यह मालूम ही नहीं हुआ कि कब रात रूपी नागिन न साझ को निगल लिया।

वह तो तब चौंका जब बादी दीया लेकर उधर आयी।

दीये की कांपती लौ में जेता के समीप रखी हुई शराब की सुराही चमक उठी। सुराही चांदी की थी। उसके पास चांदी का गिलास पड़ा था जिसमें वह धीरे धीरे घूंट घूंट पी रहा था।

इस बीच बादी ने दीवार में शीशा लगाकर बनाए हुए दीयाघर में दीया रख दिया था। उसका धुंधला प्रकाश तीन ओर चौकोर वक्ष में फैल गया। उसका एक मद्धिम अवश जेता की आकृति पर भी पड़ रहा था।

रात के साथ साथ अंधेरा गहरा हो रहा था। अंधेरे के साथ सन्नाटा भी। जेता का मस्तिष्क सुरा की खुमारी से कहीं भी केन्द्रीभूत नहीं हो रहा था। मन पखेरू छोटी छोटी उड़ानें भर रहा था। कभी किसी बात पर और कभी किसी बात पर। उसे एक अजीब सी ऊब सताने लगी। वह ऊब कभी उकताहट और कभी झुंझलाहट में बदल जाती थी।

आखिर उसने मौजूदा ऊहापोह से बचने के लिए बहुत लम्बी उड़ान ली।

एक चित्र उसकी स्मृति लोक में उभरा!

जेता ने तत्क्षण एक दीर्घ निःश्वास लिया। नेत्र मूंद लिए। चित्र गहरा हो गया। साकार हो गया!

वह किसी गांव से गुजर रहा था। छोटा सा गांव! मीणा की आबादी। संघर्षशील मीणा लोग अपनी प्राचीन परम्पराओं में तब खूब बंधे हुए थे।

जेता की दृष्टि एक सुगठित मीणा युवती पर गयी जो सिर पर दो घड़े लिए हुए थी। उसने आश्चर्य से उसे देखा। फिर अश्व वल्गा को थामकर कहा ठहरो!

युवती भागने वाले युवका स काफी दूर थी। वह बहुत ही तेज भाग रहा थी मानो वह कोई यांत्रिक पुतली हो !

भागने वाल युवका म स दा युवक भाग की ओर निकल गए।

भीड म उत्साह की लहर दौडी। दोना युवका क पक्षधर उत्साह और उल्लास स नाचन-स लग।

जेता मे भी आनद की लहर दौड गयी। वह मत्रमुग्ध सा उस दश्य को दखने लगा।

धावका म जोरदार होड लग रही थी। व दाना भरपूर कोशिश कर रह थे कि युवती को पहल कौन पकड ?

इस भागमभाग म पील साफे वाला युवक आगे बन गया।

उसी समय लाल साफे वाले युवक मित्रा व परिवार वाला न उस उकसाया।

आगे बढ वगू आगे बढ वर्ना हमारा पानी चला जाएगा।

वगू ने अपने प्रतिद्वन्द्वी को पराजित करने की एक बार फिर चेष्टा की। अपनी पूरी शक्ति स वह आग बढ़ा पर वह पील साफ वाल स पीछे रहा।

पील साफे वाला युवती के सन्निकट पहुच गया था। युवती एक बार फिर तेजी से भागी।

मगर पीले साफ वाले न भागती युवती के सिर पर स घड को उतार लिया। फिर उसन दूसरे घडे को भी !

गमेती (मुखिया) न गव स हाथ ऊचा करके कहा इस छोरी का ब्याह इसी मोटयार (युवक) से होगा।

सबन जोर जोर-स हल्ला मचाया। विजयी युवक के पक्षधर नाचने-गान लगे। चारो ओर शोर भरा वातावरण उभर आया।

बादी न जेता का ध्यान भग किया।

अतीत का वह टुकड़ा किरच किरच होकर बिखर गया। वह पुन वस्तुस्थिति मे आ गया।

उसके भद्दे होठो पर एक रहस्य भरी मुस्कान चिपकी हुई थी।

क्या बात है !'

आप खाना कब खायेंगे ? '

"थोडी दर बाद।

'हुक्म।"

बादी पसरे हुए सन्नाटे को रौन्दती हुई चली गयी। पदचाप के खत्म होते ही वही गहरा सन्नाटा 'पूतना' की तरह पसर गया।

वह सोचने लगा।

'कितनी विचित्र प्रथा है।

एकदम आदिम !

एकदम फूहड ?

छि छि छि।

उसका मन अरुचि स भर गया। ग्लानि के भाव उसके अतम म हलके फफोल की तरह उभर आए। कयी कांटे उसके चुभ गए हो—एसा उस महसूस हुआ।

जेता एक साधारण मीणा था जो अपने अदम्य साहस, रण कुशलता और अपूव शौय क बल पर वह आज बूदी का स्वामी हो गया था। एक नगर का नगरपति ?

वह हर पल महसूस करता था कि वह बडा आदमी हो गया है। हाडा व चौहानों की तरह बडा। गौरवशाली ! इज्जतदार।

उसन अपन और सामान्य मीणा जाति के मध्य एक दरार पदा कर ली थी।

वह अपन को उन सबस अलग और शुद्ध रक्तवर्णी समझने लगा

था। वह अपने समाज को छोड़कर सामन्ती समाज में जाना चाहता था।

इसीलिए उसने दीयाघर की ज्योति को अपनी दृष्टि में भरकर सोचा कि क्या इसी फूहड़ता और जंगलीपन से मेरे बच्चे ब्याह करेंगे? उस जैसे बूंदी के अधीश्वर को क्या इन्हीं जंगली रीति रिवाजों का पालन करना पड़ेगा?

एक फांस सी फंस गयी थी उसके गले में?

जेता ने जोर से खखारा। फिर सोचने लगा— मुझ जेता के नाम से बड़े बड़े शूरवीर क्षत्री कांपते हैं। आसपास के इलाके मेरे आक्रमण से थर्रा जाते हैं? हाड़ा चौहान राठौड़ों के कलेजे कांप जाते हैं मुझ जेता के बच्चे इस तरह ब्याह करेंगे? क्या मेरे बेटों की बारातें ठाट बाट से नहीं जायेंगी? क्या मैं बड़े बड़े राना महाराजाओं के समकक्ष नहीं बन पाऊंगा?

कई प्रश्न कीकर के कांटों की तरह उसे काटते रहे। सालते रहे।

जेता को मालूम था कि कल तक जो व्यक्ति खेती करता था ढोर-पशु चराता था दरबारों में जी हुजूरी करता था वही क्षत्री जाति का व्यक्ति थोड़ी सी जागीर—गाणी गांव पाकर राव राजा ठिकानेदार व जागीरदार बन जाता है—उसके सम्मान में फर्क आ जाता है—फिर वह तो वीर प्रसूता बूंदी का स्वामी है! वह अपने को शुद्ध और महान गौरवशाली क्यों नहीं मनवा लेता?

तो?

फिर एक तीखा प्रश्न उसकी आकृति पर आ पड़ा। वह उद्विग्न और खड़ा हो गया।

उसने आकाश की ओर देखा।

नील निरभ्र में तारे झिलमिला रहे थे। आकाश गंगा अपनी

सम्पूर्ण तेजस्विता से चमक रही थी। कोई-कोई रात्रि पखेरू मौन को सजीव में भंग करता हुआ प्रकोष्ठ के आगे से गुजर जाता था।

जेता का अन्तर्द्वन्द्व काफी तेज हो गया। वह प्रकोष्ठ से बाहर निकलकर खुले डागले पर आ गया।

वहाँ बहुत ही खुलापन था। उसमें मंद-मंद पवन-झकोरों के कारण टूटती न्द सी लग रही थी। तारों का उजास दीवार पर बने कंगूरों को बता रहा था।

तो ?

उसने अपने विचारों को एक क्रांतिकारी मोड़ दिया। उसमें उसके हृदय में प्रसन्नता की स्फुलिंग जल उठी। शरीर में चंचलता सी उगी।

तो उसे भी अपने बच्चों का ब्याह ऊँचे खानदानों में करना चाहिए। तभी वह अपने वंश को सामन्ती परम्पराओं व गर्व-गौरव से जोड़ पाएगा?

वह वाचालता से चहलकदमी करने लगा। उसकी मानसिकता बुजुर्दा होने लगी।

उसने अपने आसपास के सामन्तों व भूमिधरों पर दृष्टिपात किया।

कई नाम-गाँव उसके मानस-पटल पर अंकित हुए और मिट गए।

फिर एक नाम प्रकाशपुंज की तरह उभरा।

वह नाम था—दर्वासिंह का!

बांधावद के हाड़ा बलदेव के पुत्र दर्वासिंह का। एक सम्भावित नाम न था।

जेता ने अपनी बलिष्ठ भुजाओं की ओर देखा। फिर मन ही मन निर्णय लिया कि वह अपने बेटा का ब्याह दर्वासिंह की बेटियां से करेगा। उसकी नस्ल बदल जाएगी। उसका रक्त बदल जाएगा। वह

भी मान सम्मान का स्वामी होगा। सारे मामन्त क्षत्री उस अपने समकक्ष समझेंगे। वह राजा महाराजा कहलाएगा।

अचानक उसके मन को आघात लगा। एक नया प्रश्न तीर की तरह उसको तिलमिला गया कि यदि उन्होंने उसका प्रस्ताव नहीं माना तो ?

तो मैं उसके ठिकाने की इंट-से इंट बजा दूंगा।

जैता ने बड़ी अरुचि से भोजन किया। उस सारी रात एक पल के लिए भी गहरी नींद नहीं आयी। वह बिस्तर पर बेचैनी से करवटें बदलता रहा। कई बार उसके मन ने उसे टोका कि वह अपना विचार बदल दे। यह विचार भयंकर रक्तपात करा सकता है। वह कई बार विचलित भी हुआ पर भोर की पहली किरण के साथ उसने अपने निर्णय को अंतिम रूप दे दिया कि वह अपने बेटा का ब्याह बम्बावदे के देवसिंह हाडा की बेटियों से करेगा ?

उसने अपने निर्णय में व्यवधान पड़ जाने के भय से अपनी पत्नी व खास आदमियों से सलाह मशविरा भी नहीं किया।

शिवपूजा से निवृत्त होकर जैता ने अपने विश्वासी और वीर साथी राका से कहा राका! मैं तुम्हें एक विशेष काम सौंप रहा हूँ ?

हुक्म सरदार।

देखो उसके बारे में किसी को जानकारी न हो ? उसने गंभीर स्वर में दृष्टि जमाकर निर्देश सा दिया। उसके चेहरे पर एक अचलता थी।

सरदार का मुझ पर भरोसा रखना चाहिए।

फिर तुम्हें बम्बावद जाना है। वहां के हाडा देवसिंह को हमारा एक संदेश देना है।

"बताइए।"

जेता न अपना सदेश सुनाया तो राका अचम्भित हो गया। उसम लम्बी विमूढ़ता छा गयी। नत्र विस्फारित हा गए।

तुम मेरे आज्ञाकारी व विश्वासी चाकर हो। मेरे इस प्रस्ताव का तुम्हें देवीसिह के पास पहुँचाना है।'

'मगर ? वह हिचकिचाया।

अगर मगर मैं सुनना नही चाहता।'

कहावत है—रहना भादया मे चाहे बर ही हो ?"

'य सब नारी बातें हैं। इनम कोई सार नही कोइ तत नहा।

'सरदार! आप अच्छी तरह सोच लीजिए कही लेने के देन न पड जाए।"

'शूरवीर परिणाम की चिंता नही करता।

आप प्रस्ताव भेजेंग कम ?'

बडे आदमियो की तरह नाइ को अपन साथ ले जाओ। मरा और म उन्हें ब्याह क नाग्यिन हो। सारी रीतें ठिकानेदारा की तरह हों।

जो हुक्म! उसन उदास स्वर म कहा।

राका गुप्त रूप म दावावद रवाना हो गया।

□

'तो जेता न यह प्रस्ताव भेजा है।

'जी हाहाराव।

'वह हमारा समधी बनना चाहता है।

हा क्योंकि यह अभी वदी नरेश है।'

पत्थर दवता नही बन सकता !'

हर पत्थर देवता बन सकता है बशर्ते उस पर सिंदूर व माली-पन्ना लगा दिया जाय उसे किसी दवता की शक्ल म तराश दिया जाय।'

अब तक उसकी प्रतिष्ठापना नही हानी तब तक वह तराशा हुआ पत्थर पत्थर ही रहता है। देवसिंह की रगा म उबाल-सा आ गया। नन्न अगारो की तरह दहकने लगे। उसन मन ही मन दात पीस कर कहा—एक जगली मीणे की यह हिम्मत ? सरोवर सागर बनना चाहता है। हाडाओ की कन्याओ को अपनी पुत्र वधुए बनाना चाहता है। हमारी पगडी को उछालना चाहता है ? ऐसा नही हो सकता सूय के मुख पर कोई भी कीचड नहा लगा सकता मगर जेता एक विनाशकारी ज्वाला है। वाका नशस वीर है ? वह बम्बावदे को धूल म मिला सकता है।

देवसिंह म एक विचित्र भय व टूटन आ गयी। वह निरन्तर अशक्तता स घिरने लगा।

उसने राका को बठन का सकेत किया। खद अपन निजी कक्ष म आया। वह सूखे पेड की तरह टूटकर गिर पडा—आजम पर !

उसके मन ससार म झझावात उठने रह। उसने अपने आपको घम सकट की जजीरो म जकड हुए पाया। वह जता की शक्ति स परिचित था !

तब ?

उसन काफी सोच समझकर अपन भाई जसकरण का गुप्त रूप म बुलाया।

एकाएक आमन्त्रण पाकर जसकरण जरा सा विचलित हो गया। आजम पर बठते हुए उसन व्यग्रता से पूछा 'क्या बात है भाई

सा ? '

दर्वासिह ने सारी स्थिति म जसकरण को परिचित कराया। प्रस्ताव था सुनकर जसकरण के बडे-बडे चक्षु रक्तिम हो उठ। वह दात पीस कर वाला, 'उस नीच की यह मजाल ? पीतल पर लाख सोने की चादर चढ़ाओ, वह सोना नही हो सकता।'

मगर वह एक महान योद्धा है। उसकी वाजुआ म अपार शक्ति है। वह बम्रावद को धूल धूसरित कर सकता है।' दर्वासिह के नत्रा आशकाए तर उठी।

उसन भी इस सत्य को स्वीकार कर लिया। वह बुझे हुए स्वर म बोला 'यह सही है। वह एक दुर्दान्त योद्धा है। यदि एसा न होता तो क्या वह क्षत्रिया के बीच बूदी अधश्विर रहता ?

'फिर ?

फिर भी शेर घास नही खा सकता। वह भूख स अपना विनाश कर सकता है मगर अपनी मर्यादा और आन-बान नहा छोड सकता।

सहसा जसकरण गभीर हो गया। उन दोना क बीच एक सन्नाटा आकर बठ गया। दोना की आखा स सवाल निकल निकल कर चिपकत रह।

यह सही था कि जसकरण न केवल वीर था वल्कि वह एक कुटिल कूटनीतिज्ञ था। वह इस सिद्धान्त का अक्षरश पालन करता था कि युद्ध और प्रम म सब उचित है। वह येनकेन प्रकारेण शत्रु को पराजित करने म विश्वास करता था। कहीं-कहा वह नतिकता और धर्म को भी अपने स्वार्थ का साधन बना लेता था। राजनीति की शतरज का मान्निर खिलाडी था।

उसने दर्वासिह का कहा माई सा आपको जरा भी चिन्ता नहीं करनी चाहिए। हम लोग उसे सवक सिखा सकते हैं।

क्स !

मैं मीणा जाति की सबलताओ व दुबलताओ का जानता हू। डके की चाट पर मीणाओ को फतह करना कठिन है। उनम बला की शक्ति और गजब का साहस होता है। उन्हे तो चालाकी और अधम से ही परास्त करना पडेगा।'

व- क्स ?

बहुत ही गभीर गुप्त उपाय है। किसी के कानो म इस मत्रणा की भनक तक नहा जानी चाहिए।

और दोना भाई लम्ब समय तक गभीर विचार विमश करत रहे। बात चीत की समाप्ति पर देवसिंह उदास था और जसकरण एकदम निभय !

□

राका को बठक म बुलाया गया।

जसकरण और देवसिंह जाजम पर बठे थे। राका को भी समान भाव स बिठाया।

पूछा आप मीणा सरदार हत्थकडी पीएग या अफीम अरोगेंग ?

मैं ता आपके हाथ म निकाली हुई शराब हत्थकडी ही पीऊगा। राका ने मुसकराकर कहा।

थोडी दर म सब शराब क नशे मे उन्मत्त थे। राका हाडाओ क आव-आदर स बडा ही सतुष्ट हुआ।

जसकरण ने उनके नारियल को भी स्वीकारा और अपने मुशी स लिखवाया— बूदी राज्य के स्वामी स अरज है कि यदि आप अपनी

गदी और जगली प्रथाओ का छोडकर सामन्ती सभ्यता सस्कृति रहन-महन और आचार विचार को अपना लें तो मैं अपन छाटे भाई जसकरण का पुत्रियो का विवाह आपके सपूता म कर दूगा। सारे रीति रिवाज और प्रथाए हमारे अनुसार हागी। हमने आपका प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया है और यदि आपको हमारी शर्तें स्वीकार हो तो विवाह की तिथि तय कर लीजिए।

और यह सदेश बाकायदा लाल वस्त्र म लपट कर राका का दिया गया। राका बहुत ही खुश था। उसे बार-बार लग रहा था कि उसके ममता का रौब और भय सब पर छाया हुआ है। वह शीघ्र ही लौट पडा। एक गर्व की भावना लिए हुए।

□

जेता अपनी बठक मे बठा-बैठा चिलम पी रहा था। सवर्णों की तरह उसने भी अपनी मिट्टी की बनी चिलम की जगह चादी की चिलम बना ली थी। वह उसे देखकर प्रफुल्लित हुआ था कि ऐसी ही चिलमा मे य राव राजा तम्बाकू पीते हैं।

राका ने जब उसके सामने प्रवेश किया तो जेता ने एक जोर का कश मारा जिससे चिलम भक से जल उठी।

राका ने अपने सरदार के चरण स्पर्श किए।

जेता ने गर्जना जैसे स्वर म पूछा, 'क्या समाचार लाए ?

उन्होंने आपके प्रस्ताव को मान लिया है। और राका ने वह सदेश जेता के हाथ म थमा दिया।

जेता की आकृति पर सन्ध्या सूर्य चमक उठे हो ऐसी प्रसन्नता म वह खिलखिला कर बोला देखा हमारा दबदबा ? मैंने पहले ही कह

दिया था कि व हमारी बातें मान लेंगे । आखिर मैं बूदी का राजा हू ।

राका न दर्वासिह और जसकरण की प्रशसा करत हुए कहा उन दोना भाइयो न मेरा बडा ही मान-सम्मान किया । मुझ असली = थ कढी दारू पिलायी । सलीका सीखना हो तो उनस सीखें ।

इसीलिए ता मैं उनक यहा अपन बटा का ब्याह करना चाहता हू । हम लोगा म भी तो ढग सलीका आए ।

जेता न सदश पढा ।

मैं शीघ्र ही तिथि तय करूगा ।

तब समय दोपहर का था ।

सूय आकाश के बीचाबीच चमक रहा था । सारी दिशाऐं धुली धुली सी लग रही थी । कोई अप्रिय गिद्ध आकर ऊची दीवार क कगूर पर बठ गया था । गिद्ध झबरला था । जेता को वस भी गिद्ध म ग्लानि थी । फिर कोई गिद्ध घिनौना हो तो उसकी ग्लानि घणा म बदल जाती है । लगभग यही स्थिति जेता की भी हुइ । उसन गिद्ध को उडाने का आदेश दिया ।

थोडी देर म गिद्ध वहा नही था ।

उसके चारो ओर का मौन असह्य हो गया था ।

[राका न फिर आशका प्रकट की सरदार ! पर अपना समाज ता अपना समाज होता है । जब ये राजपूत अपनी मयादा रीति रिवाज और दूसरी बातें नही छाडते फिर हम ?

तू पागल है राका । जेता ने उसे झिडका मैं जा कुछ कर रहा हू वह तेरी समझ क बाहर है । आदमी को अच्छा बनने क लिए अपना ओढा हुआ हजारा साल पुराना कपडा उतार फेंकना चाहिए । यही आदमी की सही समझ है ।]

राका ने गभीर व उदास होकर कहा शायद मेरी समझ म आप

की बात नहीं आ रही हो ?'

एक उपेक्षा भरी पनी दृष्टि से जेता ने राका को देखा। राका उठकर चला गया।

जेता के होठों पर मंद मंद अर्थ एवं व्यंग्य भरी मुस्कान थी।

□

थोड़ी देर में इस बात ने हर दरवाजे पर दस्तक दे दी।

जेता की पत्नी लक्खी के कान खड़े हो गए। उसे जेता की बात पर विश्वास नहीं हुआ।

उसने अपनी दादी मक्की से पूछा यह सब क्या तमाशा है।

समधिन ! यह तमाशा नहीं सचाई है ! '

नहीं, नहीं।

आप विश्वास करें या न करें, यह बिलकुल सच्ची बात है कि आपके बेटा का ब्याह हाड़ा की बेटियों के साथ होगा।"

वह हठात उठ खड़ी हुयी।

उसने गरजकर कहा, 'ऐसा नहीं हो सकता। आदमी अपनी जाति धर्म और समाज को छोड़कर कभी भी सुखी नहीं होता।

और वह तीर की तरह जेता के पास चली गई।

जेता चिलम पी रहा था। उसकी आकृति पर एक प्रशांतता थी।

लक्खी गुस्से से तमककर बोली यह मैं क्या सुन रही हूं।"

'मुझे क्या पता कि तुम इस सन्नाटे में भी कुछ सुनती रहती हो।' उसके स्वर में व्यंग्य था। भकुटियां तन गयी थीं।

तुम मेरी बात को मजाक में मत उड़ाओ। मैं तुमको पूछ रही हूं कि क्या हमारे बेटों का ब्याह हाड़ा की बेटियों से होगा?'

हा !

'मगर क्या ?' वह चीखी।

'इसलिए कि हम लोग भी बड़े खानदान के हो जाएंगे। हमारा जंगलीपन भी मिट जायगा। हम बड़े सामंत कहलाएंगे। लक्खा हमारे खून में पवित्रता आ जाएगी।

वह विषाक्त स्वर में बोली, 'यह हाडा कोई मम दर नहीं कि हम छोटे छोटे नालों की गन्दगी को अपने में घोल लेंगे ?'

'तू औरत है। तुझमें अक्ल नहीं आ सकती।'

लक्खी बिगड पडी, 'अक्ल का ठेका तो आप मरद लोगों ने ले रखा है ? सरदार ! कहीं ऐसा न हो, ऊंचे बनने के चक्कर में हम आज जैसे भी न रहें !'

लक्खी ने बहुत ही कडवी बात कही थी जिसमें जैता को झटका लगा। जैता ने आश्चर्य दृष्टि से अपनी पत्नी को देखा। कहा, 'मैं सारी उम्र गमेती बनकर नहीं जी सकता। मुझे भी राजा महाराजा और राव महाराव कहलाने की इच्छा है।'

'कोई भी आदमी कुछ भी कहलाता है तो अपनी भुजाओं के बल पर। खोटे नाते रिश्तों के बल पर कोई भी आदमी बडा नहीं बन सकता। आदमी को अपनी असलियत नहीं भूलनी चाहिए। सियार शेर की मांद में रहने से शेर नहीं हो सकता।'

'इसका मतलब यह है कि तुम्हें यह रिश्ता पसंद नहीं है ?'

'बिलकुल नहीं। आदमी बडा वही होता है जो अपने समाज को अपने सहारे से बडा बनाए। कल को हम लुगाइयां भी तुमको अच्छी नहीं लगेंगी। हमारी भी आपको बास आएगी।' वह एक पल रुक कर बोली, 'तुम आज बलवान हो, धनवान हो, इसलिए अपने समाज-परिवार को छोटा समझने लगे। उनसे अलग होने की बात करने लगे।

अरे ! तेरे रोम रोम म इसी समाज की धूल जमी हुई है । तेरा कर्त्तव्य तो यह है कि तू अपन समाज क लिए एक आदमी को अपन जैसा बना ।'

जेता को गुस्सा आ गया । उस यह भी सहन नहीं हुआ कि उसकी पत्नी उस उपदेश दे समझाए-बुझाए ?

वह चिढ़ कर बोला, ' अपनी बकवास ब द करो । मैं वही करूंगा जो मुझ अच्छा लगेगा ।'

पत्नी चली गयी—उसकी आंखें भर भर आयी । अपन कमर म आकर वह फूट फूट कर रो पड़ी ।

□

धीरे धीरे इस चर्चा न फिर तूल पकड़ा । जेता क राजपुजारी को जब इस बात का पता चला तो वह भागा भागा आया ।

जेता न राज-पुजारी के चरण स्पर्श किय । उसन उस आत्मिक आशीर्वाद दिया 'चिरंजीव रहो दूध नहाओ पूत फलो तुम्हारी कीर्ति पृथ्वी पर चारों ओर फले ।'

जेता न राज-पुजारी को आसन दिया । राज-पुजारी न अपनी दाढ़ी प हाथ फेर कर कहा, ' सुना है गमेती कि तुम अपन बेटा के ब्याह हाडा कन्याओं स कर रह हो ?'

'हां पुजारी जी ।'

'क्या यह न्याय और धर्मसंगत है ? पुजारी न तीखा और गंभीर सवाल किया ।

"क्या न्याय-संगत है और क्या धर्म-संगत है । यह तो आप ज्यादा जानत हैं, पर मैं यह जरूर जानता हू कि इसम हम हाडों के बराबर के

आप कोई चिन्ता न करें। देवसिंह जी हमारे साथ कोई धोखा नहीं करेंगे।'

'मुझे तो इसमें कोई धोखा नजर आ रहा है।'

'आप दक्षिण रहें। ब्याह की तिथि तय कीजिए।'

राजपुजारी मुंह लटकाए वापस चला गया।

□

विवाह की तिथि तय हो गयी।

देवसिंह की ओर से भी तिथि की स्वीकृति आ गयी।

जेता फूला नहीं समा रहा था। एक तरह से उसके पाव जमीन पर नहीं पड़ रहे थे। वह देवसिंह का समधी बनेगा। वह जसकरण की बेटियों का ससुर बनेगा। तब इन बांकडली मूंछों वाले हाडा से कहेगा कि मैं तुम्हारी बेटियों का ससुर हूं, समधी हूं। बेटी देने के बाद राजपूत का सिर कभी भी ऊंचा नहीं होता।

वह धूमधाम से तैयारियां करने लगा। हालांकि उसकी पत्नी, साथी और राज पुजारी सभी लोग उदास व चिन्तित थे पर जेता किसी अज्ञात उन्माद में फूल रहा था।

जब बारात रवानगी की सारी तैयारियां हो गयीं तो राज पुजारी फिर जेता के पास आया।

जेता अपनी दुधारी तलवार को म्यान से निकाल कर देख रहा था। उसकी आकृति आंतरिक आत्मस्विता से दमक रही थी।

'क्या बात है पुजारी जी?' पांवों की आहट सुनते ही जेता ने उस पर दृष्टि जमाकर कहा।

"मैं तुम्हारा मान करता हूं। तुम्हारी हर बात को स्वीकारता

हूँ। लेकिन मेरी एक बात माननी ही पड़ेगी। पुजारी ने अपने शब्दों पर जोर दिया।

कहिए।

तुम बारात के हथियारों में गड़बड़ कर जाओगे। कहीं दोनों भाई मिलकर हमारा नाश न कर दें। पुजारी की आँखें शंका से तरल हो गयीं।

आप शंका न करें।

चाहे कुछ भी हो पर मुझे मेरी यह बात माननी ही पड़ेगी।

हालाँकि मुझ जरा-सा भी भरोसा नहीं है कि सारा भार मेरे माथे पर करेंगे पर मैं आपकी बात मान कर अपने घर की बारातों को गन्ना की तरह सजाऊँगा। मेरा हर बाराती मार हथियारों से सजा हुआ होगा।

भगवान हम सब की रक्षा करें।

राज पुजारी चला गया।

विवाह की तिथि नजदीक आ गयी।

□

जसकरण अमरपुण गाँव का स्वामी था। छोटा ठिकानेदार! बहुत ही चालाक और दूरदर्शी। शत्रु को परास्त करने में धर्म-अधर्म पुण्य पाप सच झूठ सबको सही समझता था। उसके लिए युद्ध में सब जायज थे। इसलिए उसने अपने बड़े भाई को अपनी पृष्ठभूमि में रख लिया और स्वयं ने सारा नाटक रच लिया।

उसने गाँव के पश्चिमी छोर पर बहुत ही शानदार विवाह मण्डप बनवाया। शहनाई वादक शहनाई बजा रहे थे और ढोलनियाँ गा रही

था।

बडे-बडे सामन्त अपनी परम्परागत पोशाक मे खडे थे। रग बिरगी कनातें बधी था। एक ओर मिठाइया बन रही थी।

जसकरण और देवसिंह बहुत ही व्यस्त दिखायी दे रहे थे।

जब जेता अपनी बारात का लेकर अमरघूण गाव पहुचा तब सीमा पर उसका मन शका स भर गया।

सहसा उसक पाव थम गए। मन म सदह काटो की तरह चुभन लगा।

उसन अपनी बारात को राक दिया।

राका न व्यग्र हाकर पूछा 'क्या बात है सरदार?"

बात ता कुछ भी नही है।

'फिर बारात को क्या रोका?'

जेता न एक लम्बा सास लिया और कहा 'बार बार लोगो द्वारा सदह की बात सुनकर मुझे कुछ वहम हो गया है।'

राका खिलखिलाकर हँस पडा "एक झूठ का सौ बार बोला जाए तो वह सच लगन लगता है।

हा, शायद तुम्हारी बात ठीक हो।'

'फिर?

"मैं पहले एक आदमी को गुप्त रूप से भेजकर इस बात की टोह लेना चाहता हू कि वहा सचमुच विवाह की तयारिया हो रही हैं या नही?

पुजारी न आगे बढकर, ललाट पर सलवटें डालकर कहा 'यह ता बडी सूझबूझ की बात है। इसस हमारी स्थिति मजबूत होगी।

तुरन्त ही किसनू नामक युवक को यह दायित्व सौंपा गया।

किसनू एक श्रष्ठ बहुरूपिया था। वह तरह-तरह के स्वाग रचन

म दम्भ था। वह सुबह पगडीवाला साहूकार बन जाता था तो रात को खापरिया चोर ! कभी वह नट बन जाता था और कभी वह नाचने वाली सुन्दर स्त्री !

किसनू ने तुरन्त ही ढोली का भेष धारण किया। वह इतना अच्छा साज श्रृंगार करता था कि थोडी ही देर म वह बिलकुल ढोली लगने लगा। उसने ढोलक गले म लटकाई और चल पडा।

धूप उस दिन कम थी। बेमौसम के बादल आ गए थे। फिर भी सूर्य देवता बादलो को चीर चीर कर अपना दायित्व बना रहे थे। गाव की पगडंडिया सूनी थी। इक्की दुक्की मिनख लुगाई आती जाती दिखायी दे जाती थी।

जब ढोली बना किसनू विवाह मडप के पास पहुचा तब मडप के चारो ओर बडी ही चहल-पहल थी। औरतें लोक गीत गा रही थी। ऐसा लग रहा था कि सारे लोग इस सम्बन्ध से प्रसन्न है।

किसनू ने ढोलक बजाकर एक लोक गीत गाया। फिर उसने जोर जोर स कहा—अन्नदाता ! आपका डका चारो ओर बजे आपके घर म नवनिधि—तेरह सिद्धि हो आपकी बाना बनी रहे आपकी बेटिया का सुहाग अखड हो व सोरी सुखी रहे। कुछ बधाई मुझे भी दिलाओ।

एक दरोगा आया। उसने किसनू की थाली म मिठाइया डाल दी।

किसनू ने भट से पूछा कितनी लडकियो की शादी है।

दो।

किससे ? '

बूदी क गभती वीर जेता के बेटा स ?

दोनो छोरियो की जोडी बन रहे ? उसने फिर आशीष दी।

वह पन्टकर आ गया। किसन् ने जैता को बताया कि हाडा देवसिंह और जसकरण बड़ी धूमधाम से शादी की तैयारियां कर चुके हैं। उनमें पूरा उत्साह और उल्लास है।

जैता ने बारात को रवाना करने का हुक्म दे दिया।

□

डेरे का एक हिस्सा।

जनाना महल !

रूपसिंह अपनी छोटी पत्नी मदनावली और दोनों भतीजियों के साथ बैठा था। सारे लोग गंभीर थे।

मदनावली ने अपने घूंघट को जरा सा आगे की ओर करके कहा, 'ठाकुर सा ! कहीं लेने के देने न पड़ जाय, आपको बहुत होशियार रहना है।

रानी जी ! आप जरा भी चिंता न करें। जसकरण जी ने सदा नहले पर दहला मारा है। उन्होंने कभी भी शत्रुओं से मात नहीं खाया।'

फिर ?'

आप बारात को आने दीजिए। फिर हम लोगों का आप चमत्कार देखना।'

दोनों भतीजियां मौन और स्तब्ध बैठी थीं। वे काफी गंभीर लग रही थीं। वे इस रिश्ते से अत्यन्त ही रुष्ट थीं।

बड़ी भतीजी ने पैनी दृष्टि से देखकर कहा, 'मैं आपको साफ साफ कह देती हूं कि यदि आपने मेरा हाथ उस मीणे जैता के बेटे के हाथ में देना चाहा तो मैं कटार खाकर अपने प्राण दे दूंगी।''

छोटी भी तल्ख स्वर म बोली मैं अपन प्राणो क साथ उस दुल्हे के भी प्राण न लूगी।

तुम दोनो निश्चिन्त रहो।

मन्नावती न अपनी दोनो देवरुतियो को विश्वास दिलाया तुम दोनो को अपन मन म सदेह लाना ही नही चाहिए। हाडा इतन कम जोर नही हैं। व मौत का खेल समझते ह। फिर भी जो कुछ हो रहा है वह ठीक नही हो रहा है।

तभी नगाडो की जोर जोर की आवाज सुनायी पडी।

लग रहा है बारात आ रही है। वह कर देवसिह बाहर की ओर लपक गया।

वे भी आहिस्ता आहिस्ता मडप की ओर चल पडी। बाहर उनकी डावडिया प्रतीक्षा कर रही थी।

□

मडप म बारात पहुच गयी।

मीणा जाति म शराब व अफीम खान की आदत थी ही तब। देवसिह न जैता को गल लगाया। आदर भाव स कहा बधाइ, जैता सरदार बधाई। आज आप हमार समधी हो गए। आज से हाडा और आप बराबर क कहलाएगे।'

जैता का सिर अभिमान स ऊचा हो गया। उसे लगा कि वह अब शुद्ध रक्तवाला हुआ है। राजवशी हो गया है।

देवसिह न उस मखमली गद्दे पर बिठाया। सारे मीणा वीरा को पदानुसार आसनो पर बिठाया गया।

जसकरण, देवसिह, राठौड चौहान व अन्य भाटी सरदारो ने

मीणा वीरों को शराब पिलानी शुरू कर दी।

जेता का चान्दी के प्याले में शराब दी गयी। उसके पास दलसिंह, जसकरण और राठौड़ गगासिंह बैठे।

वे प्यालों पर प्याले भर रहे थे। जेता मदमस्त हो रहा था। मीणा लोग शराब पीते पीते उन्मत्त हो गए। आवेश में भर गए। धीरे धीरे वे नाचने लगे। गाने लगे।

वे इतने मदहोश हो गए कि वह यह भी भूल गए कि वे यहां क्यों आए हैं?

सिर्फ पीना ही पीना!

आहिस्ता आहिस्ता वे मतवाले हो गए। परस्पर गाली गलौज करने लगे।

जसकरण ने दलसिंह और गगासिंह को संकेत करके मंडप के बाहर बुलाया।

दलसिंह ने आश्चर्य से पूछा, अब!

'हम अपने वीरों को संकेत कर देना चाहिए कि वे अब आक्रमण कर दें।'

"क्यों?" दलसिंह ने संदेह किया।

'शराब में मदमस्त योद्धा सही ढंग से प्रहार नहीं कर सकते?

जसकरण ने आसपास के इलाकों के सभी राजपूतों को जातीयता के आधार पर उत्तेजित कर लिया था। वैसे सामन्त राजपूत आपस में भले ही लड़ते रहे हों पर धर्म व जाति के नाम पर उन्हें पल भर के लिए जरूर इकट्ठा किया जा सकता है।

फिर जसकरण ने तो बड़ी आत्मीयता से क्षत्रियों को शुद्ध रक्त गौरव की बात कही थी। उनके सामने आंखें भर कर वह बोला था, आप सब मेरे सिर के मुकुट हैं। मैं आपकी शरण में अपनी इज्जत

वचान क लिए आया हू । आप जस न्रवीरा के होन हुए एक मीणा मरी बटिया का मेरे घर म न्याह कर ल जाएगा ?'

नही हम खून स धरती को लाल कर देंग । हमारी इज्जत पर य अछूत हाथ नही डाल सकत ?

'फिर आप मेरी सहायता कीजिए ।

इस तरह उसन अपने आसपास क सार सामन्तो सरदारा को एकत्रित कर लिया था ।

व ी सरदार घृणा स भर हुए बठ थ। जसकरण न उनकी भावुकता का बरगला लिया था । व काफी क्रोधित आर उत्तजित थ ।

जसकरण न उन्ही वीरो को तभी सकत कर दिया । सकत पात ही राजपूता न जय माताजी की जयकार करक मीणा पर आक्रमण बोल दिया ।

आक्रमण बहुत ही अप्रत्याशित और अनचीता था । हडबडाहट क साथ मीणा वीर सभलन लग ।

मगर सामन्ता न बडी ही नशसतापूवक उन असावधान मीणो का सहार करना शुरू कर दिया ।

युद्ध म मनुष्य पिशाच बन जाता है ।

सामन्त राक्षस होकर मीणा के सिर काटन लगे । मीणा म त्राहि त्राहि मच गयी साथ ही व प्रत्याक्रमण करन लग ।

जेना बहुत ही जीवटी और दुस्साहसी था । उसन अपनी तलवार निकाली । उस गगासिह और उसक साथियो न घेर लिया था ।

व तीन जन थ ।

उनके पास तलवारें और ढालें भी थी । गगासिह न अद्धस्वर म कहा माहनदास जता की गदन धड स अलग कर दो ।

मोहनदास न अपनी तलवार को साधा । क्षण भर क लिए उसने

अपने निशाने का अनुमान लगाया। फिर भरपूर प्रहार कर दिया।

अब जेता का नशा कापूर हो गया था। वह स्थिति को भाप गया। उसने बिजली की चमक की फुर्ती म पतरा बदला और नीचे झुक गया। नीचे झुकते ही उसने भरपूर वार मोहनदास की टागो पर कर दिया।

मोहनदास की टागें लकडी की तरह कट गया। वह औंधे मुह गिर गया।

जेता न लपक कर उसकी ढाल छीन ली। उसन नटा की तरह एक छलाग लगायी और वह उन दोना के घर के बाहर होकर एक दीवार म चिपक गया। वह इस विश्वासघात म बडा ही क्रोधित हो रहा था। उसन अपनी आखो म खून उतार कर कहा कमीन हाडा, धाेखे म वार कुतिया का पदा किया हुआ करता है।'

और वह गगासिंह से जा भिडा। उसन गगासिंह की तलवार को अपनी तलवार स उलझाकर उस आकाश म उछाल दिया। गगासिंह मत्यु के भय स भागन लगा कि जेता न भीम गजना करके कहा, "कहा भागना है कीडे ? और जेता न गगासिंह की गदन धड स अलग कर दी।

उसन कणभेदी स्वर मअपने साथियो को फिर ललकारा रोको! घबराओ नही इन क्षत्रियो को धूल चटवा दो।

मीणा-वीर सभल सभल कर सामन्त राजपूतो म भिड गए।

देखते देखते धरती रक्त-स्नान कर उठी। इधर उधर लाशें बिछ गयी। विवाह मडप लाशो का मडप दिखने लगा। एकदम वीभत्स और भयावह!

कितु शराब के नशे म धुत मीणा वीर अपनी प्रबल पराक्रम शक्ति स नही लड पाए। फिर उनके पास बजार के हथियार भी नही

वे बराबर थे। एसी स्थिति म व अपने स दुगन सामन्त वीरा स जमकर मुकाबला नहा कर पाए। उनक पाव बार बार लडखडा जाने थे।

स्वय जेता भी यह महसूस कर रहा था कि वह सही ढग स लड नहा पा रहा है। कितनी हा बार उसका प्रहार गदन की जगह कंध पर पड जाता था।

पहली बार उस महसूस हा रहा था कि शराब सूरवीर क लिए एक घातक चीज है! यदि आज वे शराब नहा पीत तो हाडा उनक साथ विश्वासघात करने की हिम्मत नहा करत? आह! इस शराब न उसकी जाति के वीरो का कत्लआम करा दिया!

वह अपने को वचाता हुआ राठौडा क एक झुड पर टूट पडा।

जेता क दानो वेटे दूल्हे बने हुए थ। उ होन भी थोडा थाडा पा लिया था। हालांकि शराब पीने के लिए उन्होन मना कर दिया था पर उसक एक साल न यग स हस कर कहा था वाह कुवर सा, आप आज राजपूतो क घर शादी करन आए है। यदि आप शराब नही पीएग तो हाडाआ क नामाद कस बनेंगे? अब आप कवल मीणा नहा है हमारे समधी भा हैं।

शायद यह कोइ परम्परा होगी! यही सोच कर जेता के नाना वेटो न दारू पी लिया था। उ हे भी हल्का हल्का नशा था।

जब चद हाडो न उ हे घरा तो वे भाग। दोना भाई अलग अलग हा गए।

छाटा भाई बिलकुल किशोर था। यही लगभग तरह साल का। स्वभाव का भाला और नादान। वह भाग कर मडप के बाहर निकल गया।

उसके पीछे तीन राजपूत भाग रहे थे। बड ही हटटे कटठ और

खूखार !

सबके हाथो म तलवारें थी।

थाडी देर म छोटा लडका हाफ गया। वह एक पड के सहारे हो गया। मौत की दहशत उसकी मासूम निगाहा म थी। उस क्षण वह कितनी भयानक यत्रणा भोग रहा था। चहरा सफद हो गया था। थर थर काप रहा था।

कहिए दूल्हे राज

'नही मुझ मत मारा भगवान क लिए मुझे मत मारो। वह तडप उठा।

उसने तलवार को आगे की ओर कर लिया।

'तुम अछूत होकर हमारे जँवाई बनना चाहते थे। अब हम तुम्हे ईश्वर के जँवाई बना देंगे। हा हा हा।' एक क्रूर अट्टहास!

तीनो हँस पडे।

मत्यु का आतक उसे अपने और करीब आता हुआ लगा।

मुझ मत मारो मैंने तुम्हारा क्या बिगाडा है मैंने तो अपने बाप का हुक्म माना ?' उसने गिडगिडाकर कहा।

'मारो कुत्ते को ?' एक गुर्राया!

तीनो टूट पडे।

छोटे बेटे ने कुछ पलो तक उन तीन दरिन्दो का सामना किया। फिर वह आर्त्त स्वर म चिल्लाया, "बचाओ बचाओ बचा।

खच खच्

खच खच

दो तलवारें आगे-पीछे से उसके शरीर म घुसी और वह तडपता हुआ धरती मा की गोद म सदा-सदा के लिए सो गया।

यह दश्य मदनावती ने दूर स देखा तो उसकी आत्मा कराह उठी।

वह लोक मर्यादा का परित्याग कर भागी और उसने तड़पकर कहा इस निर्दोष को क्या मारा। अरे ! यह तो बच्चा है बिलकुल नादान।

एक होड़ा घृणा से बोला साँप का बच्चा साँप ही होता है। उसकी उम्र नहीं गिनी जाती।

यह अत्याचार और अन्याय है।

यह जसकरणजी को कहिए।

यह मनुष्यता पर कलंक है। वह जोर से चीखी।

मृत्यु की गोद में जाने वाला जेता का पुत्र अंतिम रूप से कराह कर बोला मां मां पानी पानी

मदनावती उसकी ओर लपकी।

उसके प्राण पखेरू उड़ गए।

मदनावती का मन गहरे गंभीर सन्नाटे से भर गया। उसकी आत्मा अपरिसीम अवसाद से घिर गयी। करुणा पीड़ा के शूला में बिंध गया। नयन भर भर आए।

वह विक्षिप्त सी चिल्लायी नहीं-नहीं व्यर्थ का रक्तपात मत करो यह हिंसा कितनी बुरी है। हमने तो केवल विवाह के लिए मना *किया था। हराम* !

उसका यह प्रलाप हवा में ध्वनित प्रतिध्वनित होकर शांत हो गया।

नर संहार चलता रहा।

कुछ मीणा वीर रुई की जाजमों में बेसुध पड़े हुए थे। जसकरण ने जाजमों पर तेल घी छिड़क कर चारों ओर घास लगाकर आग लगा दी। फिर इन्हें करुण क्रन्दन करते हुए देखकर वह राक्षस की तरह अट्टहास कर उठा।

कितनी हृदयबधक और मर्मान्तक चीखें थीं। जलते हुए मीणा आग में से बाहर निकलते थे तो उन्हें कई तलवारें एक साथ कौंच दिया करती थीं। वे एक भयंकर मृत्यु को पाते थे।

यह पद्धति वीरों की नैतिकता पर कलंक थी।

एक लज्जाजनक और खेदजनक घटना था।

देवसिंह जसकरण और उनके कई साथी युद्धोन्मत्त बने हुए मीणों को मारते जा रहे थे।

विध्वंस!

रक्तपात!

और संहार!

जेता अब भी लड़ रहा था। उसका एक हाथ कट गया था एक आंख जाती रही थी पर उसके साहस और धैर्य में कोई कमी नहीं थी।

एकाएक जेता के बड़े बेटे का आर्तनाद सुनायी दिया। जेता उस जेता ने उस ओर देखा। वह शत्रुओं से घिरा हुआ था। जेता उस ओर भूखे बाज की तरह झपट पड़ा। उसने अपने बेटे पर प्रहार करने वाले दोनों राजपूतों को गाजर मूली की तरह काट डाला।

तभी पीछे से एक भाला आया जो जेता की दूसरी बांह को जख्मी कर गया।

वह पल भर के लिए व्याकुल हुआ। फिर वह भाले वाले पर टूट पड़ा। उसे धराशायी करता हुआ खुद लुढ़क गया।

एक भयानक सन्नाटा छा गया।

उस सन्नाटे को कराहें और चीखें भंग कर रही थीं।

देवसिंह ने लाशों से भरे विवाह मंडप को देखा। कितना घिनौना और हृदयविदारक मंडप हो गया था। एकदम श्मसानवत! रुंड मुंड!

रवन के जम चगन वट अग ।

वह विजय के उन्माद म एक बार हँसा । चीखा, 'हम जीत गए। हमारी आन रह गई हमारे रक्त-गव को कोई दूषित नही कर सकता हमार गारव को कोई धल धूसरित नही कर सकता ।

वह पागल सा जेता की लाश के पास गया ।

जेता की आकृति रक्तरजित थी। एकदम डरावनी और विकृत !

त्वसिह न झुककर देखा तो उस एक महान आश्चय हुआ ।

जेता के प्राण पखर अब भी तडफडा रहे थ। सास चल रही थी।

कुत्ते ! तू अब भी जिंदा है। दखा—झोपडी म रहकर महला के सपन देखन का नतीजा ?

बुझता हुआ दीपक अतिम वार अपनी सम्पूण आभा स दीप्त होता है उसी तरह मृत्यु के पूव जेता म एक अदम्य जीवट जागा।

उसने अपनी आखें खोली।

वह खुरदरी आवाज म बोला पापी ! गोल ! कुतिया के जाए। मैंने माचा था कि तुम लोगो के माथ नाता जोड कर मैं भी बडा हो जाऊगा खानदानी कहलाऊगा राजा महाराजा की पदवी धारण कर लूगा किन्तु अब मैं समझ गया हू कि नीचता और कमीनापन सब म एक सा होता है ! आदमी केवल खून के बल पर बडा नही होता वह बडा सस्कारो और वर्ताव म होता है। यदि मैं अपनी पत्नी पुजारी और मित्र की बात मान लेता तो मुझे यह सवनाश नही देखना पडता। यह मैं आज जान पाया हू कि बड-छोटे का भेद ताकत के बल पर नहीं मिटाया जा सकता उसके लिए कुछ और होगा एक परिवतन अनोखा परिवतन ! बहुत बडा विश्वासघात किया है रे तूने ओ हाडा तूने अपनी मा का दूध नही पिया ? मैं अगले जन्म म पदा होकर फिर तुझसे बदला लूगा

वन्ता ।

जेता को एक हिचकी आयी।

मृत्यु की भयकर छायाएं उसके क्षत विक्षत चेहरे पर बहुत हो घने रूप म मडराने लगा।

वह थूक को निगलते हुए पुन बोला, तूने विश्वासघात करके मेरे वंश को मिटाया है मेरे मासूम बच्चों को मारा है मगर मेरी आत्मा तुझे कभी भी चैन नहीं लेने देगी मेरे साथियों की आत्माए तेरा चैन हर लेंगी क्योंकि तू पापी है—कपटी है नीच है य हत्याए हैं हत्याए ?

दर्वासिह थर्रा उठा।

उसकी तलवार हाथ स छूट गयी।

उसने आखें बद कर ली।

जेता घणा स तडप कर बुझे स्वर म पुन बोला कमीन ! आखें क्या बद करता है ! पाप करके आखें बद करता है यही होली खेलनी थी तो युद्ध के मदान म खेलता डके की चोट खेलता आमने-सामने खडा होकर वीरता को आकता ?"

चोर की तीन हिचकियां आयी और उसका शरीर अकडने लगा।

दर्वासिह का विश्वासघाती मनुष्य तत्क्षण मर गया था। जाग्रत हो गया था—एक नया मनुष्य ! अहिंसा दया और करुणा स भरा एक निष्कलुष मनुष्य

वह अपने परिवेश म कट कर अत्यन्त ही करुणाभिभूत हो गया। उसने जेता को छूना चाहा तो जेता ने उसे रोक दिया 'मुझे मत छना पापी तुम्हारे स्पर्श स मेरी देह मदिर का शौय देवता मर जाएगा मेरा परलोक बिगड जाएगा मुझे नरक मिलेगा क्योंकि तू इ सान के रूप म शतान है जय शिव ज य शि व

एक उलझी उलझी-सी उबकाई जेता को आयी। खून का फव्वारा सा छूटा और जेता क नेत्र सदा सदा के लिए बद हो गए।

उसकी भयानक मृत्यु के साथ ही लडाई का अत हो गया।

युद्ध की विभीषिका साकार हो उठी।

बारात का एक एक व्यक्ति मरा कटा पडा था। मुर्दे ही मुर्दे!

देवसिह का बूदी नरेश बनने का सपना साकार-सा होने लगा।

जसकरण ने अपने चेहरे क रक्त को कमर बन्ध स पोछकर कहा भाई सा! बूदी हाडा के अधीन हो जाएगी। अब चारो ओर क्षत्रियो का साम्राज्य होगा।

देवसिह ने कोई उत्तर नही दिया। वह विमन सा उन लाशो और जेता को देखता रहा।

जसकरण उसक मनोभावो को समझता हुआ सा बोला आप इस रक्तपात से दुखी से लग रहे हैं। जो क्षत्रिय योद्धा रक्तपात और स्वजन की मृत्यु स दुखी होता है—वह अपने धर्म स हटता है। इस नरक के कीडे का यही अत होना था। इसने दैत्य होकर देवता बनने की चेष्टा की थी। कोई भी व्यक्ति अपनी मूल जाति और धर्म को छोडकर सुखी नही हो सकता। वह उसकी खोखली महत्त्वाकाक्षा होती है। जो बडी ही पीडादायक होती है। भाई सा! जो व्यक्ति बडा और समर्थ होकर अपने वर्ग का नही सुधारता उसक कल्याण की बात नही करता उसके विकास की योजनाए तैयार नही करता वह अपनी जाति व समाज वर्ग का द्रोही है। व्यक्ति का पहला धर्म और कर्त्तव्य है कि वह अपने घर परिवार समाज को सबसे पहले योग्य बनाए। जिसकी नीव ही मजबूत नही होगी वह महल कैसे बनाएगा? बिना नीव का महल ध्वस हो जाता है जिस तरह हमने आज जेता के मसूबो को ध्वस किया है।

देवसिंह की आकृति पर किसी तरह की प्रतिक्रिया नहीं हुई। एक जडता थी।

"आपने मेरी बात का जवाब नहीं दिया?" जसकरण ने फिर पूछा।

"मुझे लगता है कि मैंने यह पाप किया है। जेता और उसके साथियों के संहार के पीछे मुझे अन्याय और अधर्म लगता है।"

"आप राजपूतों की तरह सोचिए।"

"मैं राजपूत हूं तभी तो मैंने इतना बडा नर संहार कराया है। गलत होते हुए भी उसका समर्थन किया है। मैं मानता हूं कि जेता के विनाश में उसका अपना ही हाथ है मगर हमने भी तो अपना क्षात्र धर्म नहीं निभाया? यदि हम अपने को सचमुच शूरवीर समझते तो हम उसे चुनौती देते और डंके की चोट आमने सामने लडते? हार-जीत का निर्णय मरदामरदी करते।"

जसकरण झल्ला पडा। वह तीखे स्वर में बोला, "आप सिद्धान्त की बात छोडकर बूंदी पर आधिपत्य करने की बात सोचिए।"

"मैं अभी कुछ भी करने के लिए अपनी आत्मा को तैयार नहीं समझ पा रहा हूं। मैं सोचूंगा। मुझे सोचने का वक्त चाहिए। और इन लाशों का दाह संस्कार किया जाए।" देवसिंह रनवास में चला गया।

□

सबसे पहले देवसिंह में जो विचित्र प्रतिक्रिया हुई वह यह हुई कि उसने अपने निजी कक्ष में से लगभग बाहर निकलना ही बन्द कर दिया।

वह एकांतप्रिय होने लगा। उसके घर-परिवार वाले उसे समझाते रहते थे पर वह उन्हें किसी भी बात का जवाब नहीं देता था। उसकी आकृति पर व्यग्रता के चिह्न स्पष्ट नज़र आने लगे।

उसे हर पल वह कपटपूर्ण व अन्यायगत नर संहार याद आता रहता था। वह उसे जितना भूलना चाहता वह उतना ही उसकी स्मृतियों में गहरा और सजीव होता जाता था।

परिणामस्वरूप उसकी आत्मग्लानि बढ़ती गयी। वह दुरंत पीड़ा से घिरता गया। उसका मन दहकने लगा। उसका मन किसी भी काम में नहीं लगता था। एक तरह से वह मानसिक रूप से रोग ग्रस्त होने लगा।

उसे सुख की गहरी नींद नहीं आती थी।

कभी-कभी वह नींद में चिल्ला पड़ता था। कहता था रानी मदनावती मीणा की प्रेतात्माएं मुझे घेरने लगी हैं। वे कितनी भयावह हँसी हँस रही थीं कि मेरा रोम रोम खड़ा हो गया।

फिर तो उसे खाते-खाते अपना भोजन विषाक्त लगने लगा। कई बार उसे अपनी थाली में खून के चगदे नज़र आये।

वैद्य ने उसका उपचार किया और उसे गहरी नींद की दवा दी।

इससे उसका आंतरिक भय तो मिट गया पर ग्लानि और पीड़ा बढ़ती गयी।

कई बार उसे लाशें दिख जाती थीं।

एकांत में उसे ऐसा आभास होता था कि प्रेत छायाएं उसे घेर रही हैं। जिससे उसकी मानसिक यातना बढ़ जाती थी। वह रोने लगता।

मदनावती उसे धैर्य देती आपको इतना चिंतित और हताश नहीं

होना चाहिए।'

'रानी ! यदि मैं और अधिक यहा रहा तो मर जाऊगा।'

'नही नही, आप ऐसा मत कहिए।''

देव अपने मन को समझाता था पर उसकी मानसिक स्थिति बिगड़ती गयी। उसे विश्वास सा हो गया कि निर्दोष मौणों की आत्माए उसे ज्यादा जिंदा नही रहने देंगी।

कई वद्यो व सयानो ने भी यही राय दी कि उसे यहा से दूर चला जाना चाहिए।

देवसिंह के मन म यह बात घर करती गयी। उसकी उद्विग्नता व पलायनवृत्ति बढती गयी। भूख मर पड गयी।

एक दिन उसने मदनावती से कहा 'रानी ! मैं दूर बहुत दूर जाना चाहता हू।

कहा ?

'जहा मोणा की प्रेतात्माए मेरा पीछा न करें। जहा मैं अपने पापो का प्रायश्चित्त कर सकू अपनी आत्मा की शांति ढूढ सकू।

मतलब ? वह निरुत्तर हो गया।

एक दिन उसने अचानक घोषणा की—

मैं राजपाट छोडकर सन्यास लूगा और ईश्वर को स्मरण करूगा।'

'मगर

तुम चाहती हो कि यदि मैं जीवित रहू तो मुझे यहा से दूर जाने दो। मुझ थाडा बहुत भी किसी से सम्मोह है तो तुमसे ! बोलो रानी मैं चला जाऊ ? बोलो।

'आपकी मर्जी। मदनावती ने उदास होते हुए हताश स्वर म कहा, मुझे तो अपना सुहाग चाहिए।

फिर चन्द दिनो पश्चात देवसिंह ने राजपाट त्याग दिया।

उसने सन्यास ग्रहण कर लिया। महा प्रस्थान के पथ पर जाते हुए उसने कहा मैं सब मोह माया के बंधन तोड कर जा रहा हूं। मैं जान गया हूं कि जर जोरू जमीन की तीव्र लालसा मनुष्य को अमनुष्य बनाती है—उसकी आत्मा की शांति छीन लेती है। मैंने कपट से सकड़ो लोगो का संहार किया उसका दंड मेरी आत्मा को मिला जो रात दिन जलती रहती है। क्या ही अच्छा हो कि व्यर्थ के युद्ध न हो व्यर्थ के नर सहार न हो व्यर्थ के शोषण न हो। सार्थकताहीन काय पागलपन कहलाने चाहिए। मैं चाहूंगा कि हर कार्य मे एक धर्म हो न्याय हो सार्थकता हो। काश! आदमी और आदमी समानता के आधार पर इस भूमि पर जीवित रहता।

देव ने गेरुए वस्त्र धारण कर लिए। वह अपने पापो का प्रायश्चित करने के लिए किसी अज्ञातवास को चला गया।

शायद उसके पाप कपट और अनाचार की यही परिणति थी। शायद हर युद्ध पिपासु की यही परिणति होगी एक अप्राकृतिक अन्त।

कसूम्बो

2

पवन के पावन झोंके शृंग-श्रेणियों का स्पर्श करके गढ़ के गवाक्षों में प्रेतों की तरह प्रवेश कर रहे थे। मेघ-खण्ड विभिन्न आकृतियों में नील गगन में तैर रहे थे।

शाम का सूर्य प्रतीची प्रांगण में त्वरा से भाग रहा था मानो वह सृष्टि का सारा उज्ज्वल्यमान सौंदर्य चुरा कर पाताल लोक जा रहा हो।

तिमिर की झीनी परत प्राची के आंगन पर छा गयी थी।

चारों ओर नीरवता का साम्राज्य था।

अपने पाषाण गवाक्ष में मखमली गद्दी पर बैठी हुई मिरजुवर अनन्त आकाश को देख रही थी।

उसके सामने चांदी के फ्रेम में जड़ा दर्पण रखा हुआ था। वह दर्पण का अर्थ भरी दृष्टि से देखती हुई कभी उदास हो जाती थी और कभी मुसकरा पड़ती थी।

फिर सम्भ्रम की तरह उसने दर्पण को उठाया। सहमते सहमते उसने अपनी आकृति को दर्पण में उतारा।

कोई चिड़िया चक चक करती हुई गवाक्ष के पास से गुज़र गयी।

पल भर के लिए उसका ध्यान भंग हो गया। वह फिर दर्पण में अपने मुख को निहारने लगी।

अपलक और अनवरत।

एकाएक वह फूट-फूट कर रो पड़ी। उसने गोरी-गोरी हथेलियों में अपना मुंह छिपा लिया।

'रानी जी!' उसकी दासी ने समीप आकर दुःखी मन से कहा, 'धीरज रखिए रानी जी, धीरज रखिए।'

'मैं धीरज नहीं रख सकती। मैं अपनी कुरूप उनियारे (चेहरे) को नहीं देख सकती।'

'जो हो गया उसे मिटाया नहीं जा सकता।' दासी सुखली ने नम्र स्वर में कहा, 'आप सब-कुछ भूल जाइए। इस सच को भूलने में ही सुख है।'

'कैसे भूल जाऊं सुखली!' रानी सिरकुंवर ने आहत होकर कहा, 'जब-जब अपने मुख को देखती हूं, तब-तब मेरे हृदय में पीड़ा की लहरें मचलने लगती हैं। ये राजा-महाराजा नारियों पर कैसे अत्याचार करते हैं? उसे तो पांव की जूती समझते हैं। जब चाहा तब पहन कर फेंक दिया।'

यह सही भी था।

सामन्ती व्यवस्था में नारी केवल भोग की वस्तु थी। उसकी मानवीय धरातल पर कोई भी कीमत नहीं थी। पुरुष की एकाधिकार की भावना ने नारी को बन्दिनी का दर्जा दे दिया था।

चाहे रानी हो या दासी, सभी को अपनी-अपनी तरह की कैद थी। किसी को लोहे की सलाखों वाली कैद थी तो किसी को चांदी की पर सभी नारियां एक तरह से कैदी थीं।

'मैं इस अत्याचार व अन्याय को नहीं भूल सकती। लाख महा-

राजा प्रायश्चित करें पर वे मेरा अद्वितीय रूप तो नहा लौटा सकत ?

राणीजी । आप मुझे क्षमा करें यदि कोई अनजान मनुष्य आपको अधेरे मे देख ले तो भय से मर जाय ! आप एकदम प्रेतात्मा सी लगती हैं ।

मुखली ! सिरेकुवर चीख पडी 'बदजबान ! कभी मैं तेरी जीभ खीच लूगी । लाख बार कह चुकी हू कि बोलने क पहले जरा सोच लिया कर पर तेरी जबान कची की तरह चलती ही रहती है । उसने एक पल अपने गुस्से पर काबू पाकर पुन कहा 'सुन तू मेरे दहेज म मेरे सग आयी है मेरे पीहर की बेटी है इसलिए मैं तुझे अपनापे के हिसाब म बार बार माफ कर देती हू । आज तुझे आखिरी बार माफ कर रही हू । अगली बार यदि तूने जो मुह म आया बका तो मैं तुझे जिन्दा जलवा डालूगी । भाग जा अपना यह काला मुह लेकर ।

मुखली को काटो तो खून नहीं । वह कुछ पलों तक बुत बनी रही । फिर वह रानी का हाथ जोडकर बोली मुझ जबानजली को माफ कर दीजिए मैं इस मालजादी जीभ को जला डालूगी ।' और उसने अपराधी बच्चे की तरह अपने कान पकडकर कहा 'आगे म यदि मैं अणूती बात करू तो आपकी जूती और मेरा सिर ।'

भाग यहा से हरामजादी । उसने घृणा से बिफर कर कहा, कल न जनानी ड्योढी म मत आना ।

जो हुक्म ! ' और मुखली भाग गयी ।

रानी सिरेकुवर उसके जाने के बाद फिर उदास हो गयी । अपने लाल रग के ओढने की कोर से उसने अपनी आकृति को पोंछा । तुरन्त ही वह मर्मान्तक वेदना से घिर गयी । उसके सुडौल कपोल

विकृत हो गए थे। चिकनायी की जगह खुरदरापन उभर आया था। जगह जगह घावा के निशान उभर आए थे।

वास्तव म वह इतनी विरूप व बदशक्ल लगने लगी थी मानो वह डायन हो।

उसने एक पल सोचा कि सुखली झूठ थोडे ही बोलती है। वह अनपढ गवार और भोली भाली गुलाम सच्चाई को सुदर शब्द नही पहना सकती। बेचारी के जो भी मन म आता है उसे सरलता म बोल देती है। अत्यन्त ही निर्दोष भाव से।

उसने दपण म एक बार फिर देखा—अपने आप पर उसे तरस आ गया। बोली सिरकुवर! कसा तुम्हारा अप्रतिम सौन्दय था। देखने वाले प्रशसा के पुल बाधते बाधते नहीं अघाते थ? लोग मुझे रग रूप की महारानी कहते थ। सौन्दय सरोवर म नहायी हुई अप्सरा! देवलोक की परी।'

और अब?

यन्त्रवत उसने दपण उठाकर अपने आपको फिर देखा! वह अवसाद म फिर गयी। अवसाद जब अपनी चरम सीमा पर पहुचा तो क्रोध म बदल गया और जब क्रोध अपनी सीमा को लाघ गया तो वह घणा म परिवर्तित हो गया।

उसका मन अपने पति के प्रति तीव्र जुगुप्सा स भर आया। वह कितना कापुरुष है? मेरे अपूव रूप के कारण ही उनके मन म सन्देह की काली परछाइया तरा करती थी। इसी व्यथ के सन्देह ने इतनी भयानक परिणति का रूप ले लिया।

यानी बूदी नरेश महाराव नारायण दास ने अपनी ही पत्नी को कुरूप कर दिया?

कितनी भयावह स्थिति थी वह?

और अब ?

अब महाराव नारायण दास अपने कुकर्म का सारा झूठा दोष बड़ी नाटकीयता में कसूंबा[1] के नशे को दत हैं ?

उसका मन महाराव के प्रति अजीब अरुचि से भर गया। दासी गोमती ने रानी सिरेकुंवर को कई बार आकर बताया था, राणा जी! अन्नदाता कसूम्बे के नशे के बिना पानी की मछली की तरह तड़प रहे हैं।

वे कसूंबा लेते क्यों नहीं ?'

वे अब कसूम्बा नहीं लेंगे। इस कसूम्बे ने उनसे उनकी रानी का रूप छीन लिया है।

रानी सिरेकुंवर के होठों पर व्यंग भरी मुस्कान थिरक गयी।

वह भुंझला कर बोली 'कितना ढोंगी और पाखंडी है मेरा पति ? '

और वह महल के भीतर आ गयी।

चांदी के पायों के पलंग पर मखमली बिछौना बिछा था। फर्श पर कालीन। दायाघर में दीया रखा हुआ था। दो झाड़फानूस लटक रहे थे। गवाक्षों के पत्थर को आकर्षक जालियां लगायी हुई थीं।

गाव तकिये भी लगे हुए थे। पलंग के बिलकुल बायी ओर दीवार से एक शीशा लगा हुआ था। उस शीशे में सोया व्यक्ति स्पष्ट दिख जाता था।

रानी सिरेकुंवर अलसायी सी गहर गंभीर पड़ी रही। चुप चुप। फिर वह उठी। उसने जोर से पुकारा कमर बाई जरा आना तो!

कमर बाई महल के बरामदे में बैठी बैठी अपने घाघरे के टांके लगा रही थी। रानी की आवाज सुनकर, वह लपक कर पास आयी।

1 कसूम्बा—अफीम को घोलकर बनाया हुआ एक नशीला पेय।

झुककर आत्मभाव में बोली हुक्म कीजिए राणीजी।

जा थोड़ा सा कसूम्बा बना ला।

क्या आपको कसूम्बे की दरकार कैसे पड़ गयी? उसने तनिक आश्चर्य से पूछा।

रानी आतरिक रूप से बेचैन थी ही। वह झल्ला पड़ी तुम सब निकम्मी रांडों को आजकल क्या हो गया है कि तर्क-कुतर्क करती रहती हो! जो मैंने हुक्म दिया उसे तुरन्त पूरा क्यों नहीं करती? जी चाहता है कि सबकी सबको उबलते तेल के कड़ाह में डाल दूं!

केसर सन्न हो गयी। उसे अपनी मृत्यु बहुत ही समीप लगी। एक भयानक मृत्यु! वह जल्दी से खिसक गयी।

वह पान मगमरमर की बनी खल में अफीम डालकर उसे पानी के साथ रगड़कर कसूम्बा बनाने लगी।

कसूम्बा बनाते वह सोच रही थी कि उसे वास्तव में राणी जी से जबान नहीं लड़ानी चाहिए। कभी गुस्से में दण्ड दे दिया तो उसकी भी वही हालत होगी जो गोरकी की हुई थी।

गोरकी की याद भर से केसर की आत्मा पीड़ा के कांटों से बिंध गयी। चुभन का अहसास उसे सालने लगा।

वह सोच उठी कि गोरकी को राणी जी ने कितनी दर्दनाक मौत दी थी। ये राजा रानियाँ किसी को जीवन तो नहीं दे सकते मगर वे हर एक का जीवन ले जरूर सकते हैं।

गोरकी का जीवन भी इसी राणी जी ने लिया था। आज से कई माह पहले की बात है कि गोरकी एक कक्ष में सफाई का काम कर रही थी। गोरकी का जैसा नाम था वैसा ही उसका गोरा रंग था। उसका बदन मांसल था। गुलामी के खूखार पंजों में कराहने के बाद भी उसका यौवन ज्वालामुखी की तरह भभक रहा था। मैले-कुचैले

घाघरा-कांचला में उसके अंग अंग बोल में रहते थे।

महाराव नारायण दास यू ही टहलते हुए उस ओर निकल आए। यह गढ़ का एक हिस्सा था। वहुत ही आकर्षक और कलात्मक। पत्थरों का बना हुआ बहुत ही खुला खुला।

नारायणदास के साथ उनके तीन नजरिए थे। वे सब महाराव की हां में हां मिला रहे थे।

नारायणदास को देखते ही गोरकी एक अनजानी दहशत में घिर गयी।

वह लपक कर एक बड़े खंभे के पीछे छुप गयी। लम्बे-लम्बे सांस लेने लगी।

महाराव ने अपनी निगाह एक जी-हजूरिए की ओर घुमाकर कहा, 'गीधू !'

'जी अन्नदाता।'

'यह यह छोकरी कौन है।'

गीधू ने सिर झुकाकर लापरवाही से कहा, 'होगी कोई डावड़ी पावड़ी।'

'डावड़ी ?' महाराव चौंका, 'मुझे तो यह कोई बिजली लगी।'

'माई बाप ! बिजली तो आकाश में रहती है ?' गीधू ने विनम्रता से कहा।

'हम इसे अपने महल में चंद रातों के लिए बंद करना चाहते हैं।'

'जो हुक्म !'

महाराव के पास गोरकी तीन दिन और तीन रातें रही।

इसकी सूचना गिरधर को उसकी डावड़ी ने दी। महाराव जी

अफीम की पिनक म बचारी ।

मिरेकुवर धुआ फुआ हा गयी। क्रोध म वह पागल-सी हाकर बाली, उस छिनाल की यह मजाल ? मर ही सुहाग पर डाका डाल गया। साला का जीभ काट डालगी।

कमर को अच्छी तरह याद है कि रानी न गोरकी को उसी समय तलब किया। वह बचारी पीली पड गयी थी। उसक गाला पर अमानुषिकता के निशान उभर आए थ। विष दरिन्गी स उस नाचा था—महाराव न !

वह अपराधा का तरह सिर झुकाकर खडी हा गयी। एकदम डरू फरू।

रानी घृणा स बिफर कर बोली हरामजादी जिस थाली म खाती है उसी म छेद करती है।

मैं मैं क्या करती राणी जा । महाराव जी न जबरदस्ती की है। मैं जबरजना का शिकार हुई हू। आप मरी पीडा को नहा समझती ?

मैं सब समझती हू बोल महाराजा ने तुम्हे क्या दिया झठ बालगी तो राड के सारे शरीर पर डाम चिपकवा दूगी।

गारकी फूट फूटकर रो पडा। वह सुबकत सुबकत बोली रानी जी ! आप कुछ नही समझती। यदि आप हमारी मजबूरी दुख और जी के जजाला को जानती तो आपका कहना पडता कि हम मनुष्य नही जानवर हैं। हमारी अपनी कोई इच्छा नही कोई धम नहा कोई व्यक्तित्व नही हम ता चाबी भरे हुए खिलौने है जो बस रात दिन आप सबके इशारो पर चलत रहत है हमारा हँसना रोना गाना और बोलना आपके हक्म पर चलता है। हम यदि अपनी मर्जी स बोलन हैं ता लोग हमारी जबान खीच लते हैं। हम यदि अपनी इच्छा

म हँसते हैं तो हमारे दांत तोड़ दिए जाते हैं। —उसने एक पल रुककर आक्रोश भरे स्वर में कहा, "और मुझे शरीर तुड़वाने की भेंट क्या मिली उसे बताऊं ?

सच सच बताना वर्ना मैं तेरा हाड़ तुड़वा दूंगी।' रानी गरजी।

गोरकी के सिर पर एक पागलपन सा सवार हो गया। उसने बिजली की फुर्ती से अपने शरीर का एक एक कपड़ा उतार दिया।

दाग ही दाग !

राक्षसी अत्याचार !

वह रानी पर झपटती हुई बोली, 'आपके उस देव सरीखे पति देव ने मेरी इज्जत लूटने की यह भेंट मुझे दी है। गिनिए लातों के निशान चुप क्यों हैं रानी जी आप ?

रानी ने उसे बाहर जाने का आदेश दिया। गोरकी बाहर चली गई।

लेकिन गोरकी पर मानो कोई प्रेतात्मा सवार हो गयी थी। वह सारे जनाना ड्योढ़ी में मादरजात रूप में घूमती रही और महाराव की निंदा करती गयी।

बड़ारन सोवनी ने उसे समझाया देखो गोरकी अपनी जबान को लगाम दो वर्ना रांड बेमौत मारी जाएगी। तुझे ये लोग जिन्दा जला डालेंगे।

'मैं समझती हूं कि इस जिन्दगी से मौत भली है। गोरकी ने दृढ़ता से कहा।

तू पागल हो गयी है।

' हां हां मैं पागल हो गयी हूं।

और उसी रात रानी ने गोरकी को अपने रास्ते से हटा दिया। गढ़ के नीचे कोई गुप्त रास्ता था। उस रास्ते से पहले कोई

तहखाना था। उस तहखाने में सर्प बिच्छू थे। रानी ने गोरकी को अपने साथ लिया। गोरकी रानी की बदनीयत समझ गयी। वह एक जगह रुक गयी। तड़पकर बोली— मुझे मौत का डर नहीं है। मुझे डर है जब जिंदा रहने का। आप मुझे तहखाने में डाल सकती हैं।

रानी ने बड़े ही स्नेह से कहा गोरकी! तू पागल है। अरे! डावड़ियों का यही जिंदगी होती है। इस जिंदगी को तुझे हंसकर स्वीकार करना चाहिए। मैं तेरा सदा से भला चाहती आयी हूं और आगे भी चाहूंगी। आखिर तूने हमारी बड़ी सेवाएं की है। रानी गोरकी की प्रशंसा करती करती गढ़ के कंगूरे के पास आयी। गोरकी भी उसकी मीठी और चिकनी चुपड़ी बातों में आ गयी। वह पल भर के लिए वस्तुस्थिति को भूल गयी। अवसर मिलते ही रानी ने गोरकी को धक्का दे दिया। गोरकी कपड़े के पुतले की तरह नीचे की ओर चली गयी। वह करुण क्रन्दन कर रही थी। उसकी चीखें पत्थरों से टकरा कर शांत हो गयी।

गोरकी ने एक भयानक और वीभत्स मौत पायी। उसकी खोपड़ी बताशे की तरह पिस गयी। पत्थरों पर उसके रक्त की बूंदें बिखर गयी।

रानी ने अपनी सब दासियों को आगाह करते हुए कहा गोरकी के अन्त को तुम सबको सदा याद रखना चाहिए। बदतमीजी मैं कतई सहन नहीं कर सकती।

केसर के मस्तिष्क को एक झटका सा लगा। उसने कसूम्बा बना लिया था। वह उसे चांदी के प्याले में डालकर चल पड़ी।

रानी उसकी व्यग्रता से इन्तजार कर रही थी। उसके हाथ में प्याला लेकर वह महाराव के महल की ओर चल पड़ी।

महाराव ने की चौकी जाजम पर सोया हुआ था। उसकी भाम काया भम की तरह पसरी हुई लग रही थी। बेहद अफीम खाने के कारण उसकी चमड़ी पर एक रूखापन आ गया था। उसका काला रंग उस रूखेपन ने और अधिक अप्रिय लग रहा था।

अफीम के नशे का पानी से लगभग वैर सा ही होता है। इसलिए महाराव महीनों स्नान नहीं करता था। इसलिए उसके शरीर से हल्की हल्की बास आती रहती थी।

रानी मिरजू कर कसूम्बे का प्याला लेकर महाराव के महल के पास पहुंची। ड्योढ़ीदार ने झुक कर प्रणाम किया। बोला, 'राणी जी! महाराव जी आराम कर रहे हैं।'

'वे कैसा आराम कर रहे हैं—यह मैं भलीभांति जानती हूं।' रानी ने तनिक कठोर स्वर में कहा, 'वे अमल खाए बिना आराम नहीं कर सकते। वे पल भर के लिए भी नहीं सो सकते?'

'उनका हुक्म है कि किसी को भीतर न भेजा जाए।'

'आप इसकी चिन्ता न करें।' और रानी ड्योढ़ीदार की परवाह किए बिना ही भीतर चली गयी।

महाराव छपरखट सा पड़ा था।

मुजरा करके अनमना सा था। रानी ने कक्ष के भीतर घुसते ही कहा, 'और क्षमा भी चाहूंगी कि आपके हुक्म के बिना मैंने आपके पास आने की अशिष्टता की।'

महाराव ने पलकें उठाकर रानी की ओर देखा। बड़ी-बड़ी खुमार आंखों में प्रश्न तैर गया। उसके भरे व मोटे होंठ कुनकुना

पर उसके मुह से कोई आवाज नहीं निकली।

आप गुस्सा को थूक डालिए। रानी उसके समीप बैठ कर बोली लीजिए यह कसूम्बा पीजिए।

महाराव ने उसको ओर देखा। वह अपने को अपराधी मानकर बोला नहीं राणी जी मैं अब कसूम्बा नहीं पीऊगा। हर्गिज नहीं पीऊगा। इस नशे ने मुझ से बहुत बडा अपराध करा दिया है। आपका पापी बना दिया है।'

महाराज! सिरेकुवर उसके पास बैठती हुई बोली आपने जो भूल कर दी है वह अब सुधारी नहीं जा सकता। आप मेरे चेहरे के गहरे दागो को अब मिटा नहीं सकते। आप मुझ रूप को वापस रूपवान नहीं कर सकते? फिर आप अपने आपको क्या सता रहे है। आपके खून में अफीम ही अफीम है। यदि आपने अफीम नहीं खायी तो आपका जीना कठिन हो जाएगा।

महाराव ने उसे कोई उत्तर नहीं दिया। वह अपलक देखता से रानी को निहारने लगा।

रानी ने फिर अभ्यर्थना की आप यह कसूम्बा पी लीजिए। इसके पीने के साथ ही आपकी बेचैनी तडप और छटपटाहट खत्म हो जाएगी।

मैं इसे नहीं पीऊगा। इसने मुझसे बड-बड अपराध करा दिए हैं।'

उसकी सजा भी तो आप पिछले कयी दिनो से भोग रहे है। रानी ने जरा नजदीक खिसक कर कहा पी लीजिए न मेरे मुडल के सिंगार।

महाराव ने हठात रानी की ओर देखा। उसने रानी की आखो मे छुपे व्यग्य को समझ लिया था। अपनी आदत के अनुसार वह भडक

उठा 'राणीजी ! आप मुझे ताने दे रही हैं। जाइए मैं कहता हू कि आप इसी पल मेरे महल से दफा हो जाइए वर्ना हू।

वर्ना क्या ?' रानी चिहुक पड़ी।

'वर्ना । महाराव की आखों में हिंसा चहक उठी। उसकी आकृति की नसें तन गयीं। खून-सा उतर आया—नेत्रों में। वह दांत पीसता हुआ बोला तुम यहां से चली जाओ यह मेरा हुक्म है।

रानी उठ गयी। उसका विकृत चेहरा तनावों से भर कर अत्यन्त ही भयावह हो गया। वह तुनक कर बोली 'मैं हुक्म को मानूगी? यही मेरी नियति है। मगर आप इतना जरूर याद रखें कि आपने मुझे नेत्रों से कुरूप नहीं बनाया है बल्कि आपने मुझे जान बूझकर कुरूप बनाया है। मेरे प्राणनाथ! आपको मेरा रंग रूप बर्दाश्त नहीं हुआ। आपको सदा यह सन्देह रहता था कि मेरी रानी मेरे जैसे भद्दे व नीरस पति से तृप्त न होकर किसी गाल दरोगे की बाहुपाश में सोगी। मेरे अपूर्व रूप की चर्चा कर करके आपके भीतर एक विचित्र सी घृणा भर दी थी। उसी घृणा ने ।

महाराव चीख उठा राणी! अपनी जबान को लगाम दो वर्ना हम तुम्हें लकड़ी की पुतली की तरह तोड़ देंगे।

आप जैसे राजा महाराजाओं के लिए एक स्त्री की इससे ज्यादा कीमत भी तो नहीं है? जब चाहा सिर का मुकुट बना लिया और जब चाहा उसे तोड़ मरोड़ दिया। मगर मैंने एक सती सावित्री की तरह आपकी अर्चना-वन्दना की है। आपकी पूजा है। मैंने एक धर्मपरायण सम्राज्ञी की तरह आपको मन में वर कर फिर महामन्त्री के सामने अपना पति स्वीकारा है। मैंने भूल में इतनी जरूर भूल की कि परम्पराओं सम्राज्ञियों की तरह आपकी शूरवीरता पर रीझकर आपको अपना सर्वस्व बना लिया। मैं नहीं जानती थी कि शूरवीरों

म सही ढग से सोचन की शक्ति ही नही हाती है ?

वह अपमान की आग म जल कर चिघाड पडा "वक-वक वन्द करो । जाओ ।

जा रही हू पर मैं यह कदापि नही भूलूगी कि मुम कुरूप वनान म किस दुर्भावना का हाथ है । और वह तीर की तरह कक्ष स बाहर निकल गयी ।

एक अप्रिय व असहाय सन्नाटा छाया रहा ।

महाराव क सामन कसूम्ब का प्याला भरा पडा था । वह उस टुकुर टुकुर दखने लगा । उसके मन म उस पी जान की इच्छा बलवती हा गयी । आत्मा निबल हो गयी । शरीर की नस नस टूटन लगा । बन्न म पीडा की लहरें मचलने लगा । हाथ यन्त्रवत प्याल की ओर बढ़ गए । तभी उसके मन न उन्ह रोका नहा नही मुझे कसूम्बा नही पाना चाहिए । यदि मैंने पी लिया तो राणी मुझ त्यागा समभेगी । उस पक्का विश्वास हो जाएगा कि मैंने नशे की मदहोशी म नही सन्देह की एक अबोली घृणा क कारण उस कुरूप किया है ।

महाराव ने अपन आपको कोसा । वह आत्म ग्लानि म भर भर आया ।

अपने आपके बारे म सोचना सोचना वह जाजम पर पसर गया । उस सिरकुवर की शादी की एक एक घटना याद आन लगी ।

अतीत का एक लम्बा टुकडा मानस लोक म टग गया । अतीत अतीत अतीत !

□

चारो ओर जगल ही जगल !

नलण की उत्सुकता प्र गयी। अ हडता उसम कूट क्ट कर भरी था। किशारपन और यौवन क मिश्रण न उसम चचलता निडरता और लापरवाही भर दी थी।

त्सन पहरेदार म कहा पहरेदार जी ! आप कूण सरदार ह।

पहरदार न पल भर क निए युवती क दहक्त यौवन का अपनी दष्टि म भरा। फिर जरा सी दुष्टता म पूछा पहले तू बता कि तू कूण है ?"

म तलण हू।

पहरेदार न बट म कनखी मार कर कहा तन का घडा भरन जा रही है क्या ?

जानी तो जरूर पर इस भूमि पर इतना प्रतापी राजा अब तक पैदा ही नहा हुआ है जा तल घी क तालाब भरा दें।

पहरेदार निरुत्तर हो गया।

युवती आगे बढ़न लगी कि पहरदार न झट स कहा सुन नख राला यह बूदी नरेश महाराव नारायण दाम जी है।

बूदी नरेश ? युवती की आखें विस्फारित हो गया। उसक शरीर म जडता घुस गया। फिर वह मुस्करा पडी। उसन झुककर प्रणाम किया। प्रणाम इतना शाख अदा स किया कि घडा ज्यू का त्यू पड़ा रहा।

पहरेदार न पुन कहा हमारे महाराव जा चित्तौडपति राणा रायमल की सहायता करन जा रह हैं। राणाजी अभी शत्रुआ स घिर हुए हैं।

युवती म कम्पन हुआ। उसन आखें फाडकर महाराव का घूरा।

युवती जरूरत स ज्यादा चचल और मुक्त थी। उम्र क प्रभाव के कारण उसम अल्हडपन भी था। वह हठात बोली वक्त का बात

है पहरेदार जी राणाजी को किसी की मदद नहीं मिली तो अपने महराव से लो एक अदना सी राणाजी की क्या मदद करेगा ?"

फिर सहसा वह अज्ञानी दलदल में घिर गयी। उसके ललाट पर पसीने की बूंदें उभर आयीं। उसे अपनी गलती का अहसास हुआ। महराव के प्रति छोटे और आछे शब्द निकालने का एक ही नतीजा हो सकता है कि उसकी जीभ काट ली जाए।

वह आतंक से घिर गयी। उसने जीभ झट से बाहर निकाल कर अपने कान पकड़ ताकि वह पहरेदार यह समझ ले कि उसे अपनी गलती का अहसास हो गया है। अशिष्टता की क्षमा-याचना कर रही है वह।

किन्तु खराटे लेता हुआ महाराव एकाएक जाग पड़ा। उसके नेत्र रक्तिम थे। वह पहरेदार से कड़क कर बोला — "इस छोरी ने क्या कहा ? सच बोलना वरना मैं तेरा सिर धड़ से अलग कर दूंगा।'

मानो सिंह जाग गया था। वह उठा। लपक कर युवती के समीप गया। युवती के प्राण ही सूख गए। वह थर थर धूजने लगी।

महाराव ने गरज कर कहा, "क्या कहा इसने ?" पहरेदार ने सच-सच बता दिया।

युवती पसीने से लथपथ हो गयी। हाथ जोड़ कर वह महाराज के चरणों में गिर गया। घड़ा गिर कर फूट गया। वह भरीए स्वर में बोली "क्षमा अन्नदाता क्षमा मेरी इस निगोड़ी जीभ के आगे लग। मुझसे बड़ी भूल हो गयी। आप क्षमा कर दें।

महाराव जरा नीचे झुका। उसने एक झटके से उस युवती को खड़ा कर लिया। आग्नेय नेत्रों से देखा।

युवती के काटो तो खून नहीं।

महाराव बोला — "हमसे डरने की कोई जरूरत नहीं है। हम तुझे

नलण की उत्मुकता वढ गयी। अल्हडता उसम कूट कूट कर भरी थी। किशारपन और यौवन क मि त्रण ने उसम चचलता निडरता और लापरवाही भर दी थी।

उमने पहरेदार म कहा पहरेदार जी! आप कूण सरदार है।

पहरेदार ने पल भर क लिए युवती क दहकत यौवन का अप दष्टि म भरा। फिर जरा सी दुष्टता से पूछा पहल तू बता कि कूण है?

मै नलण हू।

पहरेदार न थट मे कनखी मार कर कहा तल का घडा जा रही है क्या?

जानी तो जरूर पर इस भूमि पर इतना परतापी राजा अ पना ही नही हुआ है जा तल घी क तालाब भरा दें।

पहरेदार निरुत्तर हो गया।

युवती आगे प्रश्न लगी कि पहरेदार ने झट स कहा सु राली यह बूदी नरेश महाराव नारायण दास जी है।

बूदी नरश? युवती की आख विस्फारित हो गयी शरीर मे जडता घुम गयी। फिर वह मुस्करा पडी। उसन प्रणाम किया। प्रणाम इतना शाख अदा म किया कि घडा उ पडा रहा।

पहरेदार न पुन कहा हमारे महाराव जा चित्तौड रायमल की सहायता करन जा रह हैं। राणाजी अभी शत्रु हुए है।

युवती म कम्पन हुआ। उसन आखें फाडकर महाराव

युवती जरूरत स ज्यादा चचल और मुक्त थी। उम्र क कारण उसम अबाधपन भी था। वह हठात बोली वक्त

नलण की उत्सुक्ता बढ गयी। अल्हडता उसम कूर कर कर भरी थी। किशारपन और यौवन के मिश्रण न उसम चचलता निडरता और लापरवाही भर री थी।

उसन पहरेदार स कहा पहरेदार जी ! आप कूण सरदार है।

पहरेदार न पल भर के लिए युवती क दहकते यौवन का अपनी दृष्टि म भरा। फिर जरा सी दुष्टता स पूछा, पहले तू बता कि तू कूण है ?

मैं तलण हू।

पहरेदार न चर स कनखी मार कर कहा तल का घडा भरन जा रही है क्या ?

जाती ता जरूर पर इस भूमि पर इतना परतापी राजा अब तक पदा ही नहा हुआ है जा तल घी क तालाब भरा दें।

पहरेदार निरुत्तर हो गया।

युवती आगे बढन लगी कि पहरेदार न डाट स कहा सुन नख राला यह बूदी नरेश महाराव नारायण दास जी हैं।

बूदी नरेश ? युवती की आखें विस्फारित हो गयी। उसक शरीर मे जडता घुस गयी। फिर वह मुस्करा पडी। उसन झुककर प्रणाम किया। प्रणाम इतना शाख अदा स किया कि घडा ज्य का त्यू पडा रहा।

पहरदार न पुन कहा हमारे महाराव जी चित्तौडपति राणा रायमल का सहायता करन जा रह हैं। राणाजी अभी शत्रुआ स घिरे हुए हैं।

युवती म कम्पन हुआ। उसन आखें फाडकर महाराव का घूरा।

युवती जरूरत स ज्यादा चचल और मुक्त थी। उम्र क प्रभाव के कारण उसम अबाधपन भी था। वह हठात बोली वक्त का बात

सेनापति ने राठौड़ वीर की बात का समर्थन किया, महाराज जी ! यह बिल्कुल सही है कि युद्ध में धर्म और नीति की जगह विजयश्री को ज्यादा महत्त्व दिया जाता है।

महाराव ने भी स्वीकृति सूचक सिर हिला दिया।

बलदेव सिंह जरा चौंक कर बोला मेरी समझ में एक बात और आयी है।

अचानक वह चुप हो गया।

आकाश में एक तारा झिलमिलाने लगा था। बलदेव सिंह ने उसे सिर झुका कर नमन किया। उसकी आकृति पर प्रार्थना तैरने लगी।

उसी समय मशालची ने दो मशालें जला दीं। चारों ओर प्रकाश जगमगाने लगा।

आपकी समझ में क्या बात आयी है बलदेव सिंह जी ? महाराज ने पूछा।

मेरी समझ में आया है अपनी सेना को कई भागों में बांट लिया जाए ? इसके बाद तीव्र आक्रमण किया जाए। चारों ओर के आक्रमण से पठान सेना में भगदड़ मच जाएगी। उसे यह भी भ्रम होगा कि उस पर चारों ओर से आक्रमण हुआ है। तब उनके पांव उखड़ जाएंगे और वे भाग खड़े होंगे।

महाराव झुंझला कर बोला इसका मतलब यह है कि हम अधर्म युद्ध लड़ेंगे। 7-(illegible handwriting)

बलदेव सिंह हंसा। बोला युद्ध में धर्म अधर्म और नीति कुनीति का कोई महत्त्व नहीं है। महाराज जी ! उसमें शत्रु को परास्त करने के बारे में सोचना चाहिए। युद्ध में विजय ही धर्म है।

जैसा आप ठीक समझें वैसा करें।

बलदेव सिंह ने अपने प्रमुख सरदारों को एकत्रित किया। उन्हें

करेंगे ताकि पठान सना विचलित हा जाए हडबडा जाए वह यह अनुमान भी न लगा सके कि किसन कब और कितनी ताक्त स आक्रमण किया है।

माझ ज्ञात होत महाराव नारायण दास स्वय अस्त्र शस्त्रा स सज्जित हा गया। उसका मना क वीर हुकारन लग।

महाराव न आदेश दिया, सारी टुकडिया एक साथ आक्रमण करेंगी शिवरा का नचाएगी, शत्रु पर किसी भी कीमत पर दया नही करेगी।

सहसा महाराव का वह युवती याद हो आयी। वही तलण। उसन उस अफीमची और आलसी कहा था।

क्या वह अफीम की पिनक म अपना वास्तविक गव गौरव भूल जाएगा? कसूम्ब का नशा ता आदमी को नर बनाता है। वह उसक जोश खराश म बब्बर शेर का भी चीर कर रख देता है।

हा अन्नदाता। उसके हाजरिए न कहा।

उसी पल कसूम्बे का प्याला भर कर महाराव को दिया। महाराव न उस धीमे धीमे एम पी लिया माना वह अमत हा। फिर वह उस युवती को याद करके मुसकरा पडा। सोच बठा, 'मुझे वह कवल अफीमची समझती है! मैं पठाना को रौंद डालूगा।'

और महाराव जोर स चिल्लाया, इन शत्रुओ को रौंद डालो।'

महाराव की सना न प्रयाण कर दिया। बहुत ही धीम और गुप्त ढग स।

पठान सना नि शक होकर आमाद प्रमोद मना रही थी। सभा म

शराब के दौर चल रहे थे। सिपहसालार के तम्बू में नाच गाना हो रहा था। संगीत की ध्वनि वातावरण में मादकता फैला रही थी।

सिपहसालार हमीद खां ने थोड़ी देर पहले ही कहा था हमारी फतह को कोई ताकत नहीं रोक सकती। सूर्यवंशियों का सूर्य रमद और बाहरी मदद के बिना डूब जाएगा और हमारी तकदीर का आफ्ताब चमक उठेगा।

वास्तव में स्थिति यही थी। लम्बा घेराव था। किले के वीरों की स्थिति दुर्बल हो रही थी।

मगर हालात तेजी से बदलने वाले थे।

महाराव नारायण दास की सेनाएं चारों ओर से आहिस्ता आहिस्ता आगे बढ़ रही थी।

हमीद खां शराब में मदमस्त था।

रक्कासा गा रही थी—

'हयात लमहा सी लगती है मौत सदियों सी जी चाहता है— लमहा को सदियां बना डालूं

हमीद खां ने मचलकर कहा वाह क्या खूब कहा है—हयात लमहा सी लगती है मौत सदियों सी जी चाहता है लमहा को सदियां बना डालूं मलिकाए हुस्न! बना ही डालो इन लमहों को सदियां ताकि हम जाम पर जाम पीते रहें और तुम गाती रहो।

हवा भी मचल रही थी।

एकाएक महाराव की सेना ने तेजी से आक्रमण कर दिया। मीणा वीर चारों ओर से जलते हुए तीर बरसाने लगे। उन्होंने बाज की तरह झपट कर आक्रमण कर दिया।

आक्रमण चारों ओर से हुआ था इसलिए पठान सेना संभल नहीं पायी। फिर वह शराब के नशे में लगभग मदहोश सी थी। हथियार

लापरवाही म पडे हुए थ। हा चन्द पक्के मुसलमान जा शराब का हराम समझते थ तुरत ही हाडा सना का मामना करन व लिए निकल पडे।

पठान मेना म खलबली मच गयी।

फिर अग्नि वाणो न शिविरो म आग लगानी शुरु कर दी।

चारो ओर हाहाकार मच गया।

युद्ध नियमो के विरुद्ध इस आक्रमण न पठानो व होश उडा दिए। उनम भगदड मच गयी।

फिर भी मोर्चा लग गया।

तलवारो की खनखनाहट रात्रि की नीरवता म साफ-साफ सुनायी पड रही थी। घायलो का चीत्कार और वीरो की हुकार आपस म टकरा कर एव विचित्र-सा समा पदा कर रही थी।

धरती मानव शोणित म अपनी प्यास बुझाने लगा। अधेरे रुधिर क फव्वारो स और भी भयानक हो गए।

चारो ओर सहार का नगा नाच होन लगा। रात का सन्नाटा मानो किसी गुफा म छुप गया हो।

पठान सना यह अनुमान नही लगा सकी कि आक्रमण करन वाल कितन लोग हैं।

शिविर धू धू कर जल रह थ। आग की लपटो का अवस किन की चारदीवारी तक जा रहा था। चिनगारिया झिलमिलाती सी लग रही थी।

थोडी ही दर म पठानो क पाव उखड गए। व जिधर रास्ता मिला उधर ही दुम दबा कर भागन लगे। उनक कइ वीर मारे गए। सना तिनको के घासलं की तरह छिन्न भिन्न हो गया।

शराब के दौर चल रहे थ। सिपहसालार क तम्बू म नाच गाना हो रहा था। सगीत की ध्वनि वातावरण म मादकता फला रही थी।

सिपहसालार हमीद खा न थाडा दर पहले ही कहा था हमारी फतह को कोई ताकत नहा रोक सकती। सूयवशियो का सूय रसद और बाहरी मदद के बिना डूब जाएगा और हमारी तकदीर का आफताब चमक उठेगा।

वास्तव म स्थिति यही था। लम्बा घराव था। किल क वीरा का स्थिति दुबल हो रही थी।

मगर हालात तेजी स बदलन वाल थ।

महाराव नारायण दास का सनाए चारो ओर स आहिस्ता आहिस्ता आग बढ रही थी।

हमीद खा शराब म मदमस्त था।

रक्कासा गा रही था —

हयात लमहा सी लगती है मौत सदिया सी जी चाहता है— लमहा को सदिया बना डालू

हमीद खा न मचलकर कहा वाह क्या खूब कहा है — हयात लमहा सी लगती है मौत सदियो सी जी चाहता है लमहा को सदिया बना डालू मलिकाए हुस्न! बना ही डालो इन लमहा को सदिया ताकि हम जाम पर जाम पीत रहें और तुम गाती रहो।

हवा भी मचल रही थी।

एकाएक महाराव की सना न तजी स आक्रमण कर दिया। मीणा वीर चारो ओर स जलत हुए तीर बरसान लग। उन्होन बाज का तरह झपट कर आक्रमण कर दिया।

आक्रमण चारो ओर स हुआ था इसलिए पठान सना सभल नहीं पायी। फिर वह शराब क नश म लगभग मदहोश सी थी। हथियार

लापरवाही म पड़े हुए थ। जो चन्द पक्के मुसलमान जो शराब को हराम समझते थे तुरन्त ही हाड़ा-सेना का सामना करने के लिए निकल पड़े।

पठान सेना म खलबली मच गयी।

फिर अग्नि बाणों ने शिविरों म आग लगानी शुरू कर दी।

चारों ओर हाहाकार मच गया।

युद्ध नियमों के विरुद्ध इस आक्रमण ने पठानों के होश उड़ा दिए। उनम भगदड़ मच गयी।

फिर भी मोर्चा लग गया।

तलवारों की खनखनाहट रात्रि की नीरवता म साफ-साफ सुनायी पड़ रही थी। घायलों की चीत्कार और वीरों की हुंकार आपस म टकरा कर एक विचित्र-सा समा पैदा कर रही थी।

धरती मानव शोणित म अपनी प्यास बुझाने लगी। अंगारे रुधिर के फव्वारों म और भी भयानक हो गए।

चारों ओर मौत का नंगा नाच होने लगा। रात का सन्नाटा मानो किसी गुफा म छुप गया हो।

पठान सेना यह अनुमान नहीं लगा सकी कि आक्रमण करने वाले कितने लोग हैं।

शिविर धू धू कर जल रहे थे। आग की लपटों का अक्स किले की चारदीवारी तक जा रहा था। पहाड़ियाँ झिलमिलाती सी लग रही थीं।

थोड़ी ही देर म पठानों के पाँव उखड़ गए। वे जिधर रास्ता मिला, उधर ही दुम दबा कर भागने लगे। अनेक वीर मारे गए।

घेरा तिनकों के घोंसले की तरह छिन्न भिन्न हो गया।

□

सूयवशियो ने अपने कुल देवता सूय के दर्शन करने के साथ देखा कि पठान सेना भग गयी है। उनके शिविर जलकर राख हो गए हैं। बूदी का झण्डा लहरा रहा है। व विजय श्री का प्रतीक नगाडा बजा रहे हैं।

चित्तौड के अजेय दुर्ग के दरवाजे खोल दिये गए।

बून्दी राज्य की सेना हर्षोल्लास के साथ चित्तौड के किले म प्रवेश कर गयी।

स्वय राणा ने सेना व महाराव नारायण दास की अगवानी की।

महाराव को गले लगाते हुए राणा रायमल ने कहा आपने आज समस्त राजपूतों की आन बान रख ली। पधारिए, हाडा राव जी पधारिए।

महाराव को किले के भीतर ले जाया गया।

□

उसी रात राणा की ओर से महाराव के प्रति आदर आभार प्रकट करने के लिए एक जोरदार आन दोत्सव का आयोजन किया गया।

किले की प्रमुख बारादरी को व दनवारो और फूलो से सजाया गया। सुवासित पदार्थों को दीवारो पर छिडक कर वातावरण को महका दिया गया। उस उत्सव म हाडा सामन्तो के अलावा मेवाडी सामन्त भी उपस्थित थे। कुछ ता सोने व चादी के प्यालो म डाला

गया।

आसनो पर अपने पद के अनुसार सारे लोग बैठे थे। सुरा पीने वालो को न्यछनी व मोरजडी शराबें दी गयीं।

एक मादक वातावरण पसरा हुआ था।

लानिया व ढोलियो का गायन हुआ। जनाना ड्योढी में जाली दार झरोखा म म गनिया पासवानें पदायतनें, मरजीदानें और डावडिया भी गाना का आनन्द ले रही थी। गीत की आवाज गूंज रही थी—

म्हारो छल भवर कसुम्बा पीवै
मन वाड निजर लग्या यो

सब स्त्रिया के आकर्षण का बिन्दु भीमवाय महाराव नारायण दास था। आज उसका ही बदौलत चित्तौड का सकट टला था। सूर्य वशियो न जीत का सहरा बाधा था।

महाराव कसूम्ब के प्याले कुछ ज्यादा ही पी गया था। वह क्लार न्यौछावर करने लगा।

राणा रायमल के एक भतीजी थी। वह परम सुन्दरी थी। कुवारी थी। झरोखा की जालियो म उसका सारा जीवन बीता था। मृगनयनी और चन्दन बदनी थी।

वह गहरे चपनपन म महाराव को देख रही थी। उसकी डावडी ने अत्यन्त ही उपहास मिश्रित मन्द स्वर म कहा, 'क्या बात बाई सा? आपकी नजर तो महाराव से चिपक गयी है।

सिरवदार न गव स कहा 'आज महाराव ने हमारी कसरिया पगडी की लाज रख ली। व ठीक समय पर नहीं पहुचते तो मेवाड का गौरव मिट्टी म मिल जाता। हम जौहर करना पडता।

'हा बाई सा यह तो चमत्कार सा हुआ। -

जोवन म होना चाहिए। जब अग-अग म एक तरह की उमग हो।
तू तो जानती है कि खानदानी चक्कर म कभी-कभी आजन्म कौमार्य
की ममान्तक वेदना म तडपना पडता है। वह कुवारी आग राम-
रोम को जलाती रहती है। जा मा म कह न ?"

गोमली न पूर विश्वास स कहा "देखिए बाई सा ऐसा चक्कर
चलाती हूँ कि तीर बिलकुल निशान पर बठेगा।

□

और राणा रायमल ?

वह भी चिंतित था। महाराव न उसकी इज्जत को बचाया था।
सूयवशिया की गरिमा के सूय को तेजस्वी बनाया था। उनके उपकार
का बदला कैसे चुकाया जाय ?

दोनो आमने सामने जाजम पर बैठे थे। सोने की तश्तरी म
अफीम के टुकडे पडे थे। एक प्याले म कसूम्बा था।

राणा ने कृतज्ञता से महाराव की ओर देख कर कहा "राव जी!
हम आपके उपकार का बदला कैसे चुकायेंगे ?"

महाराव पिनक म चौंका। वह जरा मुसकरा कर बोला "इसम
उपकार की क्या बात है! हर क्षत्री दूसरे क्षत्री की मदद करता आया
है। यदि हम वीर सगठित रहते तो यवन लोग इस भूमि पर कदम भी
नहीं रख सकते थे। हम हिन्दुओं म एकता की बडी कमी रही है।

मैं मानता हूँ कि हिन्दुओं की पराजय का मूल कारण ही उनका
आपस म लडना है। छोटे छोटे राज्यो म बट कर वे अपनी सही
शक्ति को नहीं पहचान पा रहे हैं। कम स कम इस काल म तो
यह बात बहुत है।

यह तो आपका सन्देश मुझे समय पर मिल गया।' महाराव ने बताया, इस बार मैंने भी युद्ध के नियम, नीतियां धर्म सभी को ताक में रख कर शत्रु को पराजित कर दिया। युद्ध का असली धर्म तो विजय ही है।'

'आप ठीक फरमा रहे हैं।

उसी समय एक चाकर ने आकर कहा, 'एकलिंग दीवाण जी को जनाना ड्योढ़ी में राठौड़ राणी जी ने बुलाया है।

क्यों ?'

'कोई विशेष काज है।

उन्हें कहिए कि वे हम यहीं पर कहलवा दें ?

डावड़ा का कहना है कि बहुत ही जरूरी है। कोई बात करनी है।

महाराव ने जरा व्यंग्य से कहा पधारिए न राणा जी ? कोई खास बात होगी।'

राणा उठ कर चल पड़ा।

□

गोमली ने वास्तव में चमत्कार सा कर दिया। उसने सिरेकुंवर की माताजी को सारी बात बता दी।

सिरेकुंवर की माता यह सुन कर गदगद हो गयी। वह लम्बी सांस लेकर बोली 'गोमली! तेरे मुंह में घी शक्कर तेरी बात साची हो जाय।'

आप राणाजी के सामने बात तो चलाइए। कहीं ऊंट सही करवट बैठ भी जाय।

ठकुरानी न कहा एस चाखे भाग मरी लाडली बटी के कहा ? इतन वडे वीर और श्रेष्ठ खानदान म लडकिया वडी तपस्या से ही व्याही जाती ह। काई पूव ज म क पुण्य का फल मिल जाय तो बात कुछ और हा सकती है।

जब तक सास है तब तक आस है। गोमली न विश्वास म कहा आप बात तो चलाइए।

ठकुरानी न राणी क पास जाकर अपनी बात बतायी।

रानी की आखें चमक उठी। वह बोली यदि यह काम हा जाए ता हम गगा नहा लें।'

'आप राणा जी से बात करिए न ?

मैं अभी करती हू।

थाडी ही दर म यह बात सारी जनाना डयोढी म फल गयी। सभी न राणी पर इसक लिए दबाव डाला।

राणी बिलकुल राजी हा गयी।

□

राणा जनाना डयोढी म आया।

रानी न सिर झुका कर मुजरा किया। कहा बडा हुकम एक अरज करना चाहती हूँ।

'फरमाइए।

'यदि एकलिंग दीवाण की दया हा ता एक काम हा सकता है।

कौन-सा ?

अपनी लाडमर सिरकुवर क हाथ पील हो सकत है'

तस ?

"महाराव से ?"

'क्या ?'

'हां राणा जी, आप उनसे चर्चा करके तो देखिए।' रानी ने प्रस्ताव रखा।

यह हो जाए तो सोने में सुहागा हो जाए। राणा ने कहा 'इतनी बड़ी जीत और लाडेसर बेटी का ब्याह ? मैं अभी जाकर चर्चा चलाता हूं।"

रानी ने भगवान एकलिंग जी को प्रणाम करके कहा 'भगवान ! हमारी अरज सुनना।'

राणा के पांवों की आहट विलीन हो गयी। ठकुरानी की आंखें न जाने क्यों भर आयीं।

□

राणा ने बैठक में कदम रखते ही पूछा, 'राणा जी ने आपको क्यों याद किया था ?'

सचमुच काम तो बहुत जरूरी था।' राणा ने बैठते हुए कहा, 'एकलिंग भगवान की दया हो तो इस विजय के साथ दूसरा भी शुभ काम हो सकता है।

'कौन सा ?

इतनी सरलता से नहीं बतलाया जा सकता। राणा ने गम्भीर मुद्रा बना कर कहा उसके लिए हमें पहले आपकी स्वीकृति चाहिए।

महाराव चौंका। उसने अपनी गर्दन को झटका देकर कहा, 'मेरी स्वीकृति ?

'हां, महाराव !

शुभ काय के लिए मेरी स्वीकृति है।' महाराव न सरलता से कहा फरमाइए

महाराव जी ! हम लाग इस जीत को एक शुभ काय स दुगनी करना चाहते हैं। उस काय म हमारे प्रसन्नता रूपी रंग म भग मी तरग मचलन लगेगी।

पहेलिया मत बुझाइए।

हम अपनी भतीजी का ब्याह आपसे करना चाहते है ! हमारी भतीजी रूप की रंभा और गुणा की सुदरी है।

महाराव की आखें विस्फारित हो गया। चन्द पला क लिए उनस कुछ भी बोला नही गया।

आप हा कर दीजिए। राणी जी की यही इच्छा है। क्या हुक्म है ?

एकलिंग दीवाण जी की बात को मैं भला कस टाल सकता हू ? महाराव की आखें चमक उठी।

सच !

हाडा का भी सूयवशिया स सम्बन्ध जोडत हुए गव ही हाता है। महाराव न प्रसन्नता म किलककर कहा इस शुभ काय म दर मत कीजिए।

' धन्य हैं आप ?

महाराव न गौरव अनुभव करते हुए कहा मैं स्वय धन्य हू! सूय वशिया स सम्बन्ध जोडना क्या काई कम बात है ? जिस खानदान की मान मर्यादा धूप की तरह निष्कलक हो उसम रक्त सम्बन्ध जाड कर मैं स्वय को गौरवान्वित समझूगा।

राणा ने अपन दीवान को बुलाया।

बडा हुक्म चाकर को सवा बताइए। दीवान न झुककर कहा।

'दीवान जी! अपनी बाइ सा सिरकुवर का ब्याह महाराज जी स करन का निश्चय हो गया है। आप पुरोहितजी को पूछ कर शीघ्र ही ब्याह का मुहूत निकलवाइए! शुभ काय म देर किस बात की?'

'यह काम मैं शीघ्र कर लूगा। दीवान न आदर भाव स कहा। वह चला गया।

दोनो नरश थोडी देर चुपचाप बठे रहे। फिर न जान वे एक दूसर का देख कर क्या अट्टहास कर उठे।

□

राजपण्डित एव राजपुरोहित न पचागो स ग्रह देखन शुरू किए। लम्बे वाद विवाद के बाद यह तय हुआ कि ब्याह अभी हो सकता है। अगल तीन चार दिन मुहूत बहुत अच्छे और शुभ हैं।

बस ब्याह की तयारिया शुरु हो गयी।

दो बडे घरानो के बीच रक्त सम्बध हो गया।

लेकिन सिरकुवर की ममेरी बहन न उस एकान्त म ले जाकर कहा, अरी लाडली आपन यह क्या किया?'

मैं आपकी बात समझी नही।' सिरकुवर न आखें मटका कर कहा।

मैंने सुना है। ममेरी बहन रूपाली न गम्भीर होकर कहा, "इस ब्याह के लिए आपन स्वय पहल की है।

हा।

अरे! जरा महाराव को थोडा तरह देख तो लिया होता? कहा आप इन्द्र की अप्सरा और कहा यह भसा?

बाइ सा! आपको यह जानना चाहिए कि सच्ची क्षत्राणी

अपन पति का रग रूप नहीं देखता बल्कि वह तो उसकी वीरता दखती है। एक वीर की पत्नी कन्लान म ही वीरागना अपना गौरव समझती है। यदि वन रूप की धूप म चकाचौंध हाती है तो वह अपना लोक परलोक दोना का बिगाडती ह।

आप सही कर रही ह मगर स्त्री पुरुष की जाडी तो अच्छी होनी चाहिए।

क्षत्राणी की जोडी ता तलवार खाडो म भी हो सकती है।

मैं समझती हू कि यह जाडी ठीक नही है।

इस पर सिरकुवर न नाराजगी हा प्रकट की।

महाराव वडा ही खुश था। दुलहन की विदाइ का समय आया।

राणा न बडे ठाट बाट स विदा किया। दहेज म घाडे रथ पालकियां और धन दिया।

इसक अतिरिक्त वस्तुआ की तरह निरीह दावडियां और दास भी दहज म दिय।

□

बूदी का वही रास्ता।

तम्बू तने हुए थ।

मोटी जाजम पर मखमली चादर बिछी थी। दीवारो पर दीप जल रह थे। चारो आर एक नीरव वातावरण था।

सिरेकवर तम्बू म चुप बठी थी।

वह कसूम्बल रग के वस्त्रो म लिपटी सी थी। छुई मुइ और सहमी सहमी।

गोमती न उसकी आकृति को दखकर पुत्कारा डाला 'सचमुच

अब पति का रूप-रंग नहीं देखती बल्कि वह तो उसकी वीरता देखती है। एक क्षत्राणी की पत्नी कहलाने में ही वीरांगना अपना गौरव समझती है। यदि कुरूप वीर पुरुष से ब्याह होता है तो वह उसका तेज [illegible] का [illegible] है।

[illegible] कहते हैं नारी-पुरुष की जोड़ी तो अच्छी होना चाहिए।

[illegible] की जोड़ी तो नल और [illegible] से भी हो सकती है।

मैं समझती हूं विवाह जोड़ी ठीक नहीं है।

इस पर सिरकुंवर ने नाराजगी ही प्रकट की।

महाराज बड़ा ही खुश था। दुल्हन की विदाई का समय आया।

राणा ने बड़े ठाठ-बाट से विदा किया। दहेज में घोड़े रथ पालकियां और धन दिया।

इसके अतिरिक्त वस्तुओं की तरह निरीह दासियां और दास भी दहेज में दिये।

□

बूंदी का वही रास्ता।

तम्बू तने हुए थे।

मोटी जाजम पर मखमली चादर बिछी थी। दीवारों पर दीप जल रहे थे। चारों ओर एक नीरव वातावरण था।

सिरकुंवर तम्बू में चुप बैठी थी।

वह कसुम्बल रंग के वस्त्रों में लिपटी-सी थी। छुई मुई और सहमी सहमी।

गोमली ने उसकी आकृति को देखकर पुकारा डाला 'सचमुच

मिरेकुवर उसक गल म लाह की मलाखा देख कर चौंक पगी। हैरान हाती हुई वोनी अर ! यह तुम्हारे गल म सलाखा किसन डाल दी ?

उस युवती न गा रोकर सारी व्यथा क्था बतायी, मरा ह्रा क्सूर था। मरी यह निगोडी जीभ कची का तरह चप्पर चप्पर चलती ही रहती है। इन्ही न मुझे इतनी बडी तक्लीफ म डाल दिया। वह युवती माना अपनी आदत स मजबूर थी। यह भी सम्भव था कि वह यौवन क सागर म एक उन्मत्त और चचल लहर थी। सिरकुवर पर अपनी कजी आखा को जमा कर वाली सच आप ही कहिए महाराव कितन खुखार नशेवाज है। कसूम्बे को पानी की तरह सडकन रहत हैं। अफीम के टुकडे मिश्री या क टुकडा की तरह खाते रहत है। युवती न सहसा अपनी जबान पर काबू किया और कहा राणी ना ! मुझे क्या पता कि बड लोगा क य अजीब शौक होत हैं। मैंन सब अनजान म कहा था। मुझे क्षमा करवा दीजिए। मैं बडी तक्लीफ पा रही हू।

मिरेकुवर ने गौर स देखा तो उस सलाख के कारण गर्दन पर डाम उभर आय थ। एक जगह छाटा सा घाव भी हो गया था।

आप मरी रक्षा कीजिए । वह रो न लगी।

सिरकुवर को दया आ गयी। उसन महाराज के पास जाकर मुजरा किया आप इस गरीब पर दया कीजिए। वडो हुक्म ! यह बडा कष्ट पा रही है।

यह बदजुबान है। इसन हमारी तौहीन की है। हमारा अपमान किया है।

बेचारी भोलीभाली है। सिरकुवर न बचाव किया।

भोली नही गजब की गोली कहो। इसन हम अफीमची कहा

कायर समझा।

तरुण महाराव के चरणों में पड़ कर बोली 'अन्नदाता! मैं आपकी गाय हूं। मुझे बचाइए। मैं अपनी इस जीभ को जला डालूंगी मेरी गर्दन से इस फन्दे को निकाल दीजिए। इसे कोई भी वीर नहीं निकाल सका। मैं खुदा की कसम खाकर कहती हूं कि आप जैसा वीर पृथ्वी पर कोई नहीं है। आप वीरों के वीर हैं क्षमा अन्नदाता, मुझे क्षमा कीजिए।

महाराव अपनी प्रशंसा सुन कर प्रसन्न हो गया। उनके रक्तिम नेत्रों में चमक चमकी।

तभी सिरेकुंवर ने प्रार्थना भरे स्वर में कहा, आप इसे क्षमा कर दीजिए।

महाराव उठा। उसने युवती के गले में सलाखों के फन्दे को एक ही झटके में खोल दिया।

सिरेकुंवर के मुंह से हठात निकल पड़ा वाह! भीम की तरह आप महाबली हैं महाराव जी! मैं आप जैसा स्वामी पाकर धन्य हूं।

युवती तो मुट्ठी में भाग खड़ी हुई।

महाराव ने गर्व से सिरेकुंवर को देखकर कहा 'मनुष्य को सदा कायदे में रहना चाहिए। उसे शिष्टता का कभी भी परित्याग नहीं करना चाहिए।'

अप्रत्याशित महाराव चौंका। पल भर के लिए वह विमूढ़ हो गया। प्रसन्नता के अतिरेक में डूब कर वह बोला आप तो फूटरीफरी हैं स्वर्ग की परी हैं। पूगलगढ़ की पद्मण हं

सिरकवर लजा गयी। उसने अपना चन्द्रमुख अपनी हथेलियों में छुपा लिया और अपने आपको अपने में सिकुड़ाने लगी।

रात मदमाती हवाओं के कारण अलमस्त थी।

□

रावडी मोवनी ने आकर गामनी से कहा गामला ! आसपा
एक चर्चा जोर से फली हुई है !

क्या ?

बेचारी राणी जा कहाँ अप्सरा और कहाँ कसूम्ब के नश
पागल ।

चुप रहो कोई सुन लेगा तो जिन्दा जमीन में गड
देगा ?

एक ठण्ड घुस गयी मावनी के शरीर में।

मदाम का प्रेत उसके भीतर प्रवेश कर गया।

गामली भी नारी की स्वाभाविक कमजोरी से विवश होकर बोल
आज मैंने राणी जी का शरीर देखा राम राम महारावन जग
जगह से काट डाला होठ और गाल महाराव तो नशे में पाग
हो जाते हैं। कब कसूम्बा व छोड़ेंगे भगवान जाने।

वल्ला ने कहा बिल्कुल जोडी नहीं मिली।

अपना अपना भाग्य !

तभी कोई चिल्लाया सब तयार हो जाओ रवानगी हो
वाली है।

और लशकर चल पड़ा।

□

मैं उनके महल म नही जाऊगी। सिरेकुवर न तडप कर कहा, मैं भी लुगाई हू, जानवर नहा। अभी ता मर पहले वाल दाग भी नही मिटे हैं।'

गोमली ने सिर झुका कर कहा "महाराव का हुक्म है। आपका जाना ही चाहिए।'

मैं नही जाऊगी।'

तो ?"

मैं अपने हाड नही तुडवा सकती।"

वह वापस चली गयी।

महाराव गुस्स म भर गया। मगर सिरेकुवर उसके महल म नही गयी और न ही उसन महाराव का अपने महल म आने दिया।

एक तनाव पदा हो गया।

□

उस दिन कोई आयोजन था।

महाराव के मातहत और मित्र सामन्त आये हुए थ। अम्बल पानी और सुरापान चल रहा था। इधर उधर की उपहास भरी बातें हो रही थीं। बातो का रुख सुन्दर स्त्रियो पर आकर केंद्रित हो गया।

सामन्त धन सिंह न कहा सरदारो ! मैं एक बार आमेर गया हुआ था। वहा मैंन एक पातुर को देखा। सच ऐसी सुन्दर स्त्री मैंन अपने जीवन म नही देखी।

'ठाकुर जीवनदास की ठकुरानी भी बडी ही सुन्दर है। सुनते हैं कि उनक नाक-नक्श बजोड हैं।

सामन्त हनुमान सिंह न हवा म हाथ उछाल कर कहा 'अरे !

दीये तल अंधेरा तो मत कीजिए। अपने खास मित्र महाराव की नयी मेवाड़ी राणी इतनी सुन्दर है इतनी सुन्दर है कि जब वह पानी पीती है तो गले में उतरता हुआ दिखायी देता है।

सच ?

'हाथ कंगन को आरसी क्या ? महाराव चाहें तो अपनी राणी जी को दर्पण में उतार कर दिखा सकते हैं।

खामोश! महाराव चीखा यह अशिष्टता है।

हनुमान सिंह ने कहा हम तो आपके मित्र हैं मित्र मित्र की मजाक कर सकता है। और आपकी पत्नी हमारी भावज हुई।

ठाकुर पृथ्वीराज मुसकरा कर झट से बोला मेरी तो वह रिश्ते में साली लगती है।

नशे की मदहोशी में धुत सुजान सिंह बोला — साली साली तो आधी घर वाली।

महाराव को लगा कि ये सभी लोग उसके गाल पर चांटे मार रहे हैं।

मसूम्बे की एक खुराक और लेकर जीतसिंह ने कहा एक डावड़ी कह रही थी कि राणी जी कांच की पुतली लग रही हैं और आप "आप तो।'

और जोर की खिलखिलाहट!

सुई चुभो जैसी तिलमिलाह[illegible] ...राव

के उसके चेहरे की नसें उभर...

वह जीतसिंह को कच्चा चबा ...

मगर उसने अपने को

उसी समय एक ठाकुर ने

उत्तर कर कहा जब आप...

करते हैं ?"

महाराव भड़क उठा। बोला, "उसे आपकी बहिन मेरे साथ है।"

"महाराव...!"

एकदम वातावरण में तनाव की ऊष्मा आयी। तभी हनुमान सिंह ने स्थिति को सम्भाल कर कहा, "बस, हम नशे में बहने लगे हैं। चलें महफ़िल को खत्म कर दें।"

"चलिए... चलिए...।" कई आवाज़ें एक साथ आयीं। वे लोग उठ-उठ कर चल पड़े। एक वाक्य उछल पड़ा "ज़रूर राणी जी किसी और...।"

महाराव का मन टूट गया। उसे जैसे चीर डाला हो किसी कसाई ने। अपमान की आग में दग्ध वह तिलमिलाता रहा। मित्रों के वाक्य उसके हृदय पर तीर की तरह लगते रहे। वह उत्तेजनाओं में घिरता गया। उसने कसूम्बे के प्याले को दीवार से टकरा कर कहा "राणी! तेरे रूप ने मेरी शांति छीन ली है। मेरे रोम रोम को पीड़ा से भर दिया है।"

और दूसरे दिन एक और घटना घटी। उस घटना ने महाराव के मन में सदेह का ज्वालामुखी भड़का दिया।

वह राणी के कक्ष से गुज़रा तो उसे राणी की खिलखिलाहट सुनायी पड़ी। महाराव के कान खड़े हो गये।

राणी ने कहा "कितना सुन्दर है ठाकुर बाघ सिंह ? ड्योढ़ीदार की जगह कोई राजकुमार लगता है। गोरा चिट्टा, हसमुख स्वभाव का बाँका और मजेदार।"

"राणी जी ! उसने मुझे एक बात और बतायी है।"

"क्या ?"

"उसने कहा था कि एक ठाकुर था। उस ठाकुर के तीन रानियाँ

दीय तले अन्धेरा तो मत कीजिए। अपने खास मित्र महाराव की नयी मवाड़ी राणी इतनी सुन्दर है इतनी सुन्दर है कि जब वह पानी पीती है तो गले मे उतरता हुआ दिखायी देता है !

सच ?

हाथ कगन को आरसी क्या ? महाराव चाहें तो अपनी राणी जी को दपण म उतार कर दिखा सकते हैं।

'खामोश ! महाराव चीखा यह अशिष्टता है।

हनुमान सिंह न कहा हम तो आपके मित्र हैं मित्र मित्र की मजाक कर सकता है। और आपकी पत्नी हमारी भावज हुई।

ठाकुर पथ्वीराज मुसकरा कर धर्म से बोला मेरी तो वह रिश्ते मे साली लगती है।

नशे की मदहोशी म धुत सुजान सिंह बोला — साली साली तो आधी घर वाली।

महाराव को लगा कि ये सभी लोग उसके गाल पर चाटे मार रहे हैं।

कसूम्बे की एक खुराक और लेकर जीतसिंह ने कहा एक डावडी कह रही थी कि राणी जी काच की पुतली लग रही हैं और आप आप तो ।

और जोर की खिलखिलाहट !

सूई चुभने जसी तिलमिलाहट हुई महाराव के शरीर म। आक्रोश से उसके चेहरे की नसें उभर आयी। एक बार उसकी इच्छा हुई कि वह जीतसिंह को कच्चा चबा जाए।

मगर उसने अपने को सयत रखा !

उसी समय एक ठाकुर ने गम्भीर मुद्रा बनाकर विदूषक की तरह उचक कर कहा 'जब आप राणी जी के साथ होते हैं तो क्या अनुभव

स्वतन्त्रता के पश्चात हिन्दी व राजस्थानी के सुप्रसिद्ध कथाकार हैं—श्री यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र ।

इन्होंने दोनों भाषाओं के साहित्य में राजस्थान के राजनीतिक, सामाजिक ग्रामीण, सामन्ती व ऐतिहासिक जन जीवन व चरित्रों को गहराई से चित्रित तथा महानगरीय यथार्थ, टूटन व संघर्ष को निजी अनुभूति से प्रस्तुत किया है।

संघर्षशील साहित्यकार की पीड़ा भोगते हुए इतना विविध इतना प्रामाणिक व इतना सार्थक लिखा है कि समस्त हिन्दी व राजस्थानी जगत गर्व कर सकता है। विभिन्न कथानकों व कथापात्रों के सृजन में वे बेजोड़ हैं।

राजस्थान साहित्य अकादमी से पुरस्कृत और श्री विष्णुहरि डालमिया व सूर्यमल्ल पुरस्कारों से सम्मानित 'चन्द्र' जी के कई उपन्यास गुजराती मराठी सिन्धी उर्दू तेलगू आदि भाषाओं में अनूदित होकर समादर हो चुके हैं। राजस्थान के इतिहास पर इनकी कई रचनाएं चर्चित हो चुकी हैं। 'श्रेष्ठ ऐतिहासिक कहानियां और दो श्रेष्ठ उपन्यास (ऐतिहासिक) हमारे प्रकाशन से प्रस्तुत हैं। दोनों कृतियाँ पठनीय एवं सार